अमृत विचार

लोक दर्पण

रविवार, 15 जून 2025 www.amritvichar.com

विश्व सैर सपाटा दिवस

सैर सपाटा भागदौड़ भरी जिंदगी में ब्रेक

अमृता पांडे
लेखिका, हल्द्वानी

जितना पुराना मानव जीवन का इतिहास है उतना ही पुराना सैर सपाटा भी है। भले ही समय के साथ इसके मायने और तरीके बदल गए हों। जरूरत, जिज्ञासा, खोज और मनोरंजन के अतिरिक्त विभिन्न उद्देश्यों से यात्राएं की जाती रही हैं। आदम काल में मनुष्य भोजन और आश्रय की तलाश में एक स्थान से दूसरे स्थान में भटकता फिरता था। धीरे-धीरे आदमी ने व्यापार करना शुरू किया तो व्यापार के उद्देश्य से दूर-दूर की यात्राएं होती थी। इसके अतिरिक्त धार्मिक यात्राएं भी महत्वपूर्ण रहीं। राजतांत्रिक परिवेश के दौरान राजाओं के बीच होने वाले युद्ध भी यात्राओं का एक मुख्य कारण थे। धीरे-धीरे मनुष्य मनोरंजन के लिए भी यात्राएं करने लगा था। रोम और मिस्र एक समय पर्यटन के मुख्य केंद्र बिंदु थे जहां पर लोग प्राकृतिक दृश्य का आनंद लेने और वहां की सभ्यता से परिचित होने के लिए यात्राएं करते थे। मौर्य वंश के राजकाज के दौरान भारत में भी विदेशी पर्यटकों की लंबी लंबी यात्राओं के वर्णन मिलते हैं जिनका उद्देश्य ज्ञान प्राप्ति के अतिरिक्त नए-नए विषयों का अन्वेषण करना भी था। मेगस्थनीज और सेल्युकस निकेटर इनमें प्रमुख थे। मध्यकाल में इब्नबतूता और मार्को पोलो ने विभिन्न देशों की अपनी यात्राओं के माध्यम से नए-नए राज खोले, जिन्हें अपनी पुस्तकों में भी अंकित किया।

1498 में पुर्तगाल से कालीकट पहुंचने वाले वास्कोडिगामा ने भारत पहुंचने के लिए समुद्री मार्ग की खोज की थी। पर्यटन और सैर सपाटा जाने अनजाने में कई नई खोजों को जन्म देता है। 19वीं शताब्दी में औद्योगिक क्रांति के बाद तो आवागमन के सुलभ सस्ते साधन उपलब्ध होने की वजह से देश विदेश की यात्राएं आसान हो गई। उच्च संपन्न वर्ग के भारतीय लोगों की उच्च शिक्षा प्राप्त करने और विदेशी संस्कृति के अवलोकन के उद्देश्य से विदेश यात्राएं आम होने लगी। 1758 के बाद कॉक्स एंड किंग्स जैसी आधिकारिक यात्रा कंपनियां गठित होने लगीं और बीसवीं शताब्दी तक आते आते हवाई मार्ग की यात्राओं ने सैर-सपाटे और पर्यटन की राह खोली।

हर साल 19 जून को विश्व सैर सपाटा दिवस मनाया जाता है। इस बार इसे वर्ल्ड सौंटरिंग डे के रूप में मनाए जाने की घोषणा हुई है। ब्रिस्क वॉक की बात हम लोग करते हैं और इसके फायदे भी जानते हैं मगर विश्व सैर-सपाटा दिवस 2025 की थीम कुछ जुदा है। यह दुनिया भर के लोगों को धीमे चलने और अपने आस-पास की दुनिया की सराहना करने और प्रकृति से जुड़ने के लिए प्रोत्साहित करती है। आज जिस गति से समय आगे बढ़ रहा है हर किसी में आगे बढ़ते रहने की होड़ है। जैसे कोई सड़क दुर्घटना होती है तो किसी के पास इतनी फुर्सत नहीं होती कि रुक कर उस घायल इंसान को मदद की जाए। इस तकनीकी युग ने इंसान को एक मशीन बनाकर रख दिया है। ऐसे में अपने मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य का ध्यान रखना काफी कठिन हो जाता है। सौंटरिंग का शाब्दिक अर्थ आराम से चलना या धीरे-धीरे चलना या निरुद्देश्य चलना भी है। इस तरह के निरुद्देश्य भ्रमण में भी कई बार बड़े-बड़े उद्देश्य निकल आते हैं।

तेज चलने के चक्कर में कई बार हम बहुत कुछ नजर अंदाज कर जाते हैं। बेहतरीन प्राकृतिक दृश्य और सामाजिक घटनाएं हमसे छूट जाती हैं। टहलने से हमारी रचनात्मकता बढ़ती है। हम दुनिया को एक बेहतरीन नजरिये से देख सकते हैं।

शरीर में रक्त प्रवाह बढ़ता है और हम मूड स्विंग से बचते हैं। पैदल चलने और टहलने से कई तरह के कैंसर और दूसरी बीमारियों के खतरे टल जाते हैं। दुनिया भर में प्रकृति ने अपने भीतर खूबसूरत खजाना संजोकर रखा है। सैर हमें इस प्राकृतिक सौंदर्य का आनंद लेना सिखाती है। हम टहलकर अपने मन भी को एकाग्रचित कर सकते हैं।

1979 में डब्ल्यू टी रेव ने सौंटरिंग की तरफ ध्यान दिला कर 19 जून को अवकाश दिवस के रूप में मनाया। इस दिन को मनाने का उद्देश्य लोगों में आराम के महत्व की समझ को बढ़ाना है। कभी-कभी धीरे-धीरे चलकर हम अपने आसपास के वातावरण को देखने और समझने के बेहतरीन अवसर पाते हैं। आजकल की ज़िंदगी भागदौड़ से भरी हुई है। हम रोज़मर्रा की गतिविधियों में इतने व्यस्त हो जाते हैं कि अक्सर उन छोटी-छोटी चीज़ों की सराहना करना भूल जाते हैं जो हमें खुशी देती हैं। हम इतनी तेज़ गति से चलते हैं कि अपने आस-पास की सुंदरता को नज़रअंदाज़ कर देते हैं। इस दिन का उद्देश्य लोगों को तेज़ रफ्तार से चलने के बजाय धीमा चलने और अपने जीवन को रोचक और खुशनुमा बनाने के लिए प्रेरित करना है। "सौंटरिंग" शब्द का अर्थ है आराम से टहलना। विश्व सैर-सपाटा दिवस उन लोगों के लिए आराम करने का सबसे उपयुक्त दिन है जिनके पास अपनी व्यस्तता से पीछा छुड़ाने का समय नहीं है। पर्यटन केवल घूमना ही नहीं है। नई संस्कृतियों को समझने, नए समुदायों से जुड़ने का अवसर भी है। जब हम दुनिया के अलग-अलग देश में जाते हैं तो वहां के लोगों का रहन सहन, उनके विचार, खानपान, वेशभूषा, संस्कृति से रूबरू होते हैं। हमारी सांस्कृतिक समझ बढ़ती है और पूर्वाग्रह का अंत होता है। इतना ही नहीं वेश, वैश्विक नागरिक के रूप में हमारा दृष्टिकोण विस्तृत होता है।

एक बड़ा उद्योग

पर्यटन एक बहुत बड़ा उद्योग है जो लाखों करोड़ों लोगों को रोजगार प्रदान करता है। चाहे या स्थानीय स्तर पर हो या राष्ट्रीय स्तर पर। होटल, होम स्टे, रेस्टोरेंट और गाइड जैसे व्यवसाय के लिए तो पर्यटन जीवन रेखा का काम करता है। पर्यटन से जो अच्छी खासी आय प्राप्त होती है उसे प्राणी उद्यान, ऐतिहासिक स्थलों, इमारतों और अभयारण्यों के संरक्षण में खर्च किया जा सकता है। सबसे बड़ी बात यह कि पर्यटन के दौरान कई चुनौतियां आती है जो हमें आगामी जीवन के लिए तैयार करती हैं। अपने कंफर्ट जोन को छोड़कर हमें जाड़ा, गर्मी, बरसात हर तरह के मौसम का सामना करना पड़ता है जिससे हमारी सहन करने की शक्ति और आत्मविश्वास पड़ता है। नई-नई जगहों में भ्रमण के दौरान नई चीज़ें सीखने को मिलती है। कोविड के दौरान जब यात्राएं प्रतिबंधित थीं तो दुनिया भर में पर्यटन जगत को बहुत ज्यादा नुकसान हुआ था। कोरोना ने फिर से दस्तक दी है पर यह उतना भयावह नहीं है।

क्या कहते हैं आंकड़े

विदेश की बात करें तो बीते कुछ सालों में रोम, वेनिस, एम्स्टर्डम, पेरिस या प्राग जैसे देशों में घूमने वाले पर्यटकों की संख्या में बहुत ज्यादा इजाफा हुआ और पर्यटन का दबाव झेलने में असफल हो चुके इन देशों ने पर्यटन की गति को रोकने के लिए कुछ सफल कदम भी उठाए। इंग्लैंड, इंडोनेशिया, जापान, स्कॉटलैंड जैसे देशों में भी पर्यटकों की संख्या को नियंत्रित करने के लिए पर्यटन टैक्स को दो-तीन गुना बढ़ा दिया गया। संयुक्त राष्ट्र विश्व पर्यटन संगठन के आंकड़ों के अनुसार, भारत में जनवरी से अक्टूबर 2024 के बीच 76 .8 लाख विदेशी पर्यटकों ने दौरा किया।

'हाउ इंडिया ट्रैवल्स एब्रॉड' शीर्षक से मेक माय ट्रिप की रिपोर्ट बताती है कि बीते कुछ वर्षों से भारतीय भी खूब विदेशी सैर सपाटा करते हैं। इंटरनेशनल टूरिज्म डेस्टिनेशन पर जाने वाले भारतीयों की संख्या दिन प्रतिदिन बढ़ रही है। यूएई थाईलैंड अमेरिका सिंगापुर और इंडोनेशिया सैर सपाटे के लिए भारतीयों के सबसे अधिक पसंदीदा स्थान है। कजाकिस्तान में अल्माटी और अजरबैजान में बाकू भारतीयों के लिए नए उभरते डेस्टिनेशन है। हांगकांग, कोलंबो और टोक्यो भी सैर सपाटे के लिहाज से भारतीयों की टॉप लिस्ट में है। एक ओर दुबई और क्वालालंपुर जैसे डेस्टिनेशन है तो दूसरी तरफ न्यूयॉर्क, पेरिस और ज्यूरिक जैसे महंगे शहर भी भारतीयों के सैर सपाटे की लिस्ट में हैं। कहने का तात्पर्य है कि अपनी-अपनी आर्थिक हैसियत के मुताबिक भारतीय विदेशी यात्राओं में रुचि ले रहे हैं। विदेश में होमस्टे, विला, हॉस्टल खोजने का चलन भी बढ़ा है। बाली, दुबई और सिंगापुर में भारतीय प्रवास कर रहे हैं हालांकि चॉइस की बात करें तो यूरोपीय देश शीर्ष पर हैं। हर साल लगभग 28 मिलियन से ज्यादा भारतीय विदेश यात्रा करते हैं।

कैसे होगा प्रबंधन

पर्यटन स्थलों के सारे घर होटल और होमस्टे में तब्दील हो गए हैं, जिससे छात्र और नौकरी पेशा लोगों को किराए का घर मिलना मुश्किल हो गया क्योंकि इनके रेट बेतहाशा बढ़ गए हैं। कोई भी व्यवस्था जब आम नागरिकों के लिए भारी पड़ जाती है तो उसका विरोध जरूर होता है। सैर सपाटे के शौकीन लोगों को रोक नहीं जा सकता मगर पर्यटन का उचित प्रबंध बहुत जरूरी है। कोई भी क्षेत्र एक निश्चित मात्रा में ही पर्यटकों का दबाव झेल सकता है। पर्यटकों की सुविधा के लिए हम दो-तीन मंजिला पार्किंग बना भी दें लेकिन पर्यटकों के द्वारा जिन अपशिष्ट पदार्थों का त्याग किया जाएगा, जिसमें मल मूत्र समेत पानी की बोतल और प्लास्टिक कचरा आदि सभी को शामिल है, उसका प्रबंधन कैसे होगा?

उत्तराखंड के रुद्रप्रयाग जिले में समुद्र तल से 4135 मी की ऊंचाई पर स्थित वासुकी ताल की स्थिति भी बहुत ही दयनीय है। केदारनाथ आने वाले युवा और ट्रैकिंग में रुचि रखने वाले लोग वासुकी ताल तक भी पहुंचते हैं और उनके साथ प्लास्टिक की बोतलें और प्लास्टिक कचरा वहां तक पहुंच जाता है जिसे यात्रा सीजन के बाद कुछ साहसी लोगों के द्वारा एकत्र कर नीचे लाया जाता है।

क्या है दुष्प्रभाव

पर्यटन राजस्व प्राप्ति के साधन के साथ ही कभी-कभी क्षेत्रीय निवासियों के लिए यातना भी बन जाता है। प्रकृति पर पर्यटन की मार ग्लेशियरों के पिघलने, नदियों के सूखने, सड़क चौड़ीकरण के लिए पेड़ों के काटने के उदाहरण से समझा जा सकता है। कुछ ऐसे स्थान जहां पर पर्यटन का दुष्प्रभाव पड़ता है, उन्हें प्रतिबंधित रखना आवश्यक है। आज के समय में पर्यटकों और स्थानीय लोगों के बीच में झड़प होना भी आम बात हो गई है। होटल बुकिंग के नाम पर कई फर्जी वेबसाइट फल फूल रही हैं। साइबर ठगी के मामले आए दिन बढ़ते जा रहे हैं। इसका निदान कैसे हो, यह सोचने विचारने का विषय है। पर्यटकों का आना स्वागत का विषय है मगर पर्यटन को सुव्यवस्थित और नियंत्रित बनाना जरूरी है।

भीड़ का दबाव

पर्यटन से कई सरोकार जुड़े हैं। स्थानीय लोगों के, देश और सरकार के राजस्व के साधन जुड़े हैं। इसके साथ ही साथ पर्यावरण संरक्षण के सवाल भी जुड़े हैं। पर्यटन नीति ऐसी हो जो दोनों में सामंजस्य बना सके पर अकसर देखा गया है कि ऐसा कम होता है। आज दुनिया के कई देश पर्यटन उद्योग से त्रस्त हैं। अपने प्रदेश उत्तराखंड की अगर बात करें तो आजकल पर्यटन सीजन चरम पर है। नैनीताल के पास कैंची धाम में लगने वाला जाम स्थानीय लोगों के लिए मुसीबत बन गया है। एंबुलेंस जाम में फंसने की वजह से लोगों की जान पर बन आ रही है, रोज यात्रा कर कार्यालय जाने वाले लोगों के लिए मुसीबत हो गई है। वे समय पर कार्यालय और घर नहीं पहुंच पा रहे हैं। कई लोगों की ट्रेन छूट रही है। पहाड़ की तरफ जाने वाला यही मुख्य मार्ग है। इतना जाम कि पर्यटक भी रानीखेत, अल्मोड़ा जैसे आगे के क्षेत्र में जाने से गुरेज कर रहे हैं इसलिए वहां के अर्थव्यवस्था भी चौपट होने का डर है। इसी तरह आजकल चार धाम यात्रा चल रही है। गढ़वाल क्षेत्र में ट्रैफिक का इतना दबाव है कि जिसका कोई समाधान दिखाई नहीं देता। कुछ दिनों पहले ही मैं केदारनाथ यात्रा करके आई हूं। केदारनाथ से पहले सोनप्रयाग और सीतापुर में दो-दो मंजिला बड़ी-बड़ी दो पार्किंग बनाई गई है मगर सड़कों में दोनों तरफ वाहन खड़े होने से आने जाने वाले वाहनों को काफी इंतजार करना पड़ रहा है और हर समय जाम का माहौल बना है। दरअसल तीर्थाटन अब धार्मिक पर्यटन बन चुका है जहां श्रद्धालु तो आते ही हैं, साथ में पर्यटन बनाने रील बनाने वाले लोगों की भी अच्छी खासी भीड़ है। क्या अपने प्रदेश की ही बात नहीं है मध्य प्रदेश के उज्जैन समेत हर तीर्थ स्थल और ऐतिहासिक शहर में इसी तरह की भीड़ है।

बढ़ती समस्या और पर्यटकों का विरोध

बेतहाशा बढ़े इस पर्यटक ने एक नई समस्या खड़ी कर दी है। शहर के शहर कूड़े का अंबार बन गए हैं। यहां तक कि शांति प्रिय पहाड़ी इलाके भी पर्यटकों की भीड़ भाड़ से कूड़े करकट का बसेरा बन कर क्षरण के मुहाने पर खड़े हैं। लोगों को पर्यटन के विरोध में मुंह खोलते भी देखा जा रहा है। इस तरह का विरोध स्पेन के एक बड़े महत्वपूर्ण शहर बार्सिलोना में भी देखा गया था, जहां हर साल भारी संख्या में पर्यटक पहुंचते हैं। पर्यटन की वजह से नशीले पदार्थों की तस्करी, अपराध, यौन गतिविधियां अधिक बढ़ी हैं। बार और होटल में युवाओं की इतनी डिमांड है कि तनख्वाह के लालच में वह अपनी अधूरी पढ़ाई छोड़कर काम में लग जाते हैं। पर्यटकों की आवाजाही से समाज के मूल सामाजिक और आर्थिक ढांचे को बचाए रखना एक चुनौती बन गया है। वैनगार्डिया के लेखक जेवियर मास डी ज़ाक्सास ने लिखा है, "मेरा बर्सिलोना बड़े पैमाने पर पर्यटन के द्वारा बर्बाद किया जा रहा है लेकिन पर्यटकों को बाहर निकालना इसका समाधान नहीं है।" कुछ निवासियों की भावनात्मक प्रतिक्रिया तो पर्यटकों को बाहर निकालने तक आ गई। पर्यटकों पर पानी के पिचकारी से बौछार करना, रेस्तरां में, बगीचे में जहां भी उन्हें देखा तो 'अपने घर वापस जाओ' के नारे और पोस्टर लेकर उनके सामने खड़े हो जाना जैसे विरोध के तरीके थे। शहर की आबादी 16 लाख और पर्यटक 40 लाख। एक गड़बड़ाने और चौंकाने वाला आंकड़ा।

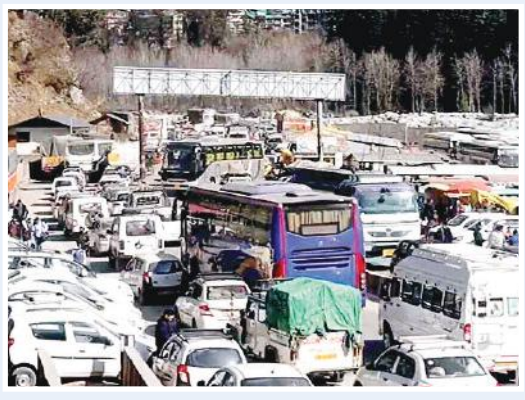

व्यक्तित्व का आईना बॉडी लैंग्वेज

डॉ. मीता गुप्ता
शिक्षाविद

बॉडी लैंग्वेज अपने आप में एक ऐसी भाषा है, जो हमारे व्यक्तित्व का दर्पण होती है। हमारे आसपास कई तरह के लोग होते हैं। कुछ अपनी बात बेबाकी से रखते हैं, जबकि कुछ लोग इशारों-इशारों में बहुत कुछ कह जाते हैं। हमारे दिमाग में चलता तो बहुत कुछ रहता है, लेकिन हम अपनी हर बात को शब्दों में बयां नहीं कर पाते। कभी-कभी हमारी बॉडी लैंग्वेज काफी कुछ बयां कर देती हैं। यह बात हर कोई आसानी से नहीं समझ पाता है। सामने वाले इंसान के भीतर चल रहे विचार, सोच और इरादों की परख कुछ ही लोगों को होती है। ऐसे लोग इंसान की मानसिकता को समझने में ज्यादा गलतियां नहीं करते। कह सकते हैं, इन्हें किताबों की तरह इंसानों को पढ़ना बखूबी आता है।

क्या है बॉडी लैंग्वेज

बॉडी लैंग्वेज यानी हाव-भाव, यह एक तरह की शारीरिक भाषा है, जिसमें शब्द तो नहीं होते, लेकिन बिना कुछ कहे अपनी बात कह जाते हैं। जैसे किताब के हर पन्ने में अलग-अलग बातें होती हैं, उसी तरह हाव-भाव के पीछे भी अलग-अलग अर्थ छिपे होते हैं। शरीर की भाषा किसी के रवैये और उसकी मन की स्थिति के अनुरूप हो सकती है। मसलन, आक्रामकता, मनोयोग, ऊब, मनोरंजन और सुख सहित अन्य कई भाव प्रदर्शित कर सकती है। खास बात यह है कि मनुष्य अनजाने में शरीर के माध्यम से संकेत भेजता भी है और समझता भी है।

शारीरिक भाषा का बहुत महत्व होता है। यह हमारी भावनाओं को व्यक्त करने का सशक्त माध्यम है। शारीरिक भाषा यह बता सकती है कि किसी व्यक्ति को किसी विशेष स्थिति में कैसा महसूस हो रहा है। उदाहरण के लिए, मुस्कान खुशी को दर्शा सकती है, जबकि क्रॉस्ड आर्म्स सुरक्षा या असहजता का संकेत दे सकते हैं। यह हमारे संचार-कौशल की अभिवृद्धि करती है। गैर-मौखिक संकेत मौखिक संदेशों को पूरक या विरोधाभासी बना सकते हैं। जब शारीरिक भाषा कहे गए शब्दों के साथ मेल खाती है, तो इससे स्पष्टता और विश्वास बढ़ता है। इसके विपरीत, मिश्रित संकेत भ्रम और अविश्वास पैदा कर सकते हैं। यह हमारी सांस्कृतिक भिन्नताएं को भी उजागर करती है। शारीरिक भाषा की व्याख्या संस्कृतियों में काफी भिन्नता से हो सकती है। उदाहरण के लिए जबकि पश्चिमी संस्कृतियों में आंखों का संपर्क आत्मविश्वास का संकेत माना जाता है, यह कुछ पूर्वी संस्कृतियों में असम्मान समझा जा सकता है।

विभिन्न मुद्राएं

शरीर की मुद्रा- शरीर की अलग-अलग अवस्था इंसान के चरित्र और व्यक्तित्व की सबसे बड़ा संकेत है। संतुलित और सीधी अवस्था आत्मविश्वास व खुद से आश्वस्त होने का संकेत है। इसी तरह बैठने की अवस्था भी बॉडी लैंग्वेज का मूलभूत हिस्सा है। बैठने के दौरान आगे की ओर झुक कर बैठना आपके मित्रवत होने का संकेत है। अगर कोई अपना सिर उठाते समय मुस्कराता है, तो वह शख्स स्वभाव से चंचल मन हो सकता है या फिर मजाकिया हो सकता है। सिर नीचे झुकाता हुआ शख्स कुछ छिपा रहा होता है।

चेहरे का भाव- बॉडी लैंग्वेज में चेहरे महत्वपूर्ण होता है। चेहरे के भाव नाराजगी, खुशी, जलन, चिंता और चंचलता को सामने ला देते हैं। हर दिन ऐसे कई मौके होते हैं, जब लोग अपनी प्रतिक्रिया अपने चेहरे पर बने प्रतिबिंब से दे देते हैं। अगर कुछ पसंद नहीं आ रहा हो, तो नाक सिकोड़ते हैं। बच्चे नाराज हों तो मुंह फुला लेते हैं।

आंखों से बात- निश्चित रूप से आंख अभाषिक रूप सब कुछ कह देने वाला बड़ा माध्यम है। चाहे कम हो या ज्यादा, हम किसी भी इंसान को समझने के लिए उसकी आंखों में झांकते हैं। मानव में यह स्वभाव जन्म से ही होता है। आंख के द्वारा न सिर्फ इंसान के मूड को पढ़ा जा सकता है, बल्कि उसके अंदर क्या चल रहा है, उसे भी अच्छी तरह से समझा जा सकता है।

क्या होते हैं शारीरिक भाषा के संकेत

तरोताजा होने के साथ सीधा खड़ा रहना, आत्मविश्वास का, हिप्स पर हाथ रख कर खड़ा रहना, तैयार व आक्रामक होने का, पैर पर पैर चढ़ा कर बैठना, उचाट दिखने का, पैर फैलाकर बैठना, आराम की मुद्रा का, छाती पर बांह पर बांह फंसाना-बचाव की मुद्रा का, पॉकेट में हाथ डालकर चलना, उदासी का, गाल पर हाथ रखना, चिंता व सोच में डूबे रहने का, नाक को थोड़ा-थोड़ा छूना और रगड़ना, अस्वीकृति या शंका का, आंख रगड़ना, शंका व अविश्वास का, दोनों हाथों पर गाल टिकाना और नीचे देखना, उचाट दिखने का द्योतक होते हैं।

अनुमान है कि इंसान चेहरे पर 2,50,000 हाव-भाव उत्पन्न कर सकता है, झूठ बोलने वाला इंसान नजरें मिलाकर बात नहीं कर सकता और तेजी से बोलने वाले सेल्समैन भरोसे के लायक नहीं होता। परखी गई बॉडी लैंग्वेज हमेशा सही नहीं होती, इसलिए प्रतिक्रिया देने से पहले सोच समझ लें और किसी को सिर्फ उसकी बॉडी लैंग्वेज से जज करना सही नहीं है।

स्टेटस के हिसाब से भी बॉडी लैंग्वेज बहुत ज्यादा बदलती है। आपने देखा होगा कि अगर गांव में किसी की मृत्यु हो जाती है, तो वहां पर चिल्ला-चिल्ला कर खुल के रोते हैं, खुलकर अपनी बॉडी लैंग्वेज एक्सप्रेस करते हैं, वहीं आपने कुछ लोगों को देखा होगा वे एकदम से सफेद कुर्ता पहन कर आते हैं और मुंह पर रुमाल रखकर या हाथ रखकर रोते हैं। दोनों का दुख एक ही है, दोनों को एक जैसे ही दुख हो रहा है, लेकिन बॉडी का लैंग्वेज अलग है। बॉडी लैंग्वेज जो है, वह स्टेटस के हिसाब से, टाइम के हिसाब से, वातावरण के हिसाब से और इमोशन के हिसाब से बदलता है।

ऐसे अपनाएं सही बॉडी लैंग्वेज

सामने देख के बोलें, आत्मविश्वास से भरे रहें, परिस्थितियों का काल्पनिक आकलन, लोगों के हाव-भाव को गौर से देखें, मन और चित्त को शांत रखें, खुद को एक्सप्रेस करें, इसका बार-बार अभ्यास करें, जैसे एक नाटक या फिल्म मे कई पात्र होते हैं, आप विभिन्न पात्रों की भूमिका निभाने का अभ्यास करें। सोचें, इस जगह मैं होता या होती तो मैं इस पात्र को कैसे निभाता या निभाती, शीशे के सामने खड़े होकर अपनी आंखों में आंखें डालकर बिना बोले अभिनय करके देखें, जब आप किसी से इंप्रेस हों, तो उसकी बॉडी लैंग्वेज को परखें, आप अपने पालतू जानवरों से भी बॉडी लैंग्वेज सीख सकते हैं। जैसे कि आपने अभिनेत्री प्रियंका चोपड़ा की बॉडी लैंग्वेज 'एतराज़' फिल्म में देखी होगी, ऐसी लग रही थी कि जैसे किसी बिल्ली से मैच करती है। इसके बाद 'गली ब्वॉय' में एमसी शेर का कैरेक्टर देखा होगा, किसी लायन के जैसे लग रहा था एकदम शांत रिलैक्स।

बॉडी लैंग्वेज के लिए गर्दन एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। आप एकदम सीधा खड़े रह कर बात करते हैं, तो आप अलग तरीके से बोलते हैं। अगर आप गर्दन को थोड़ा सा झुकाकर बोलते हैं, तो आपका बोलने का तरीका अलग हो जाता है। अंततः यह कहा जा सकता है कि बॉडी लैंग्वेज से ही हमारी कैरेक्टर बिल्डिंग आरंभ होती है, इसलिए हमें अपनी बॉडी लैंग्वेज से सामने वाले को क्या संदेश देना चाहते हैं, यह हमारी सोच पर निर्भर करता है।

शख्सियत

अप्रतिम कवि रसखान और रसलीन

रसखान और रसलीन हिंदी बृज भाषा के अप्रतिम कवि हैं। रसखान और रसलीन दोनों हरदोई जिले के मूल निवासी थे। रसखान पिहानी कस्बे के तो रसलीन बिलग्राम के निवासी थे। रसखान का मूलनाम इब्राहीम तो रसलीन का मूलनाम गुलाम नबी था। दोनों के दिल्ली दरबार में आना जाना था। इब्राहीम ने कृष्ण की सुंदरता के बारे में सुन रखा था और उन्हें एक, हलवाई के लड़के में कृष्ण जैसी सुंदरता नजर आती थी और वह हलवाई के लड़के की सुंदरता के दीवाने थे। एक पक्षीय प्यार और लोगों द्वारा अपमानित किए जाने पर इब्राहिम का मन लौकिक प्रेम से हटकर कृष्ण के अलौकिक प्रेम में आ गया। इब्राहिम इतनी अच्छी कविता करते थे कि लोग उन्हें रस की खानि कहने लगे। वृंदावन आकर इब्राहिम उर्फ रसखान ने गोसाईं विट्ठलनाथ से गोविंद कुंड में पुष्टिमार्ग की दीक्षा ली और कृष्ण भक्ति में लीन हो गए। रसखान का रचनाकाल 1640 से 1670 तक का माना जाता है, उन्होंने लिखा है-देखि गदर हित साहिबी दिल्ली नगर मसान। छिनहि बादासा वंस की ठसक छाडि रसखान।।

शिवचरण चौहान
कानपुर

दिल्ली का कत्लेआम देखकर रसखान दिल्ली छोड़कर आ गए। ऐसा शिव सिंह सरोज ग्रंथों में उल्लेख मिलता है। दो सौ वैष्णवन की वार्ता भी रसखान का गुसाई विट्ठलनाथ से दीक्षा लेना प्रमाणित है। किशोरी लाल वाजपेई ने भी रसखान शतक और सुजान रसखानि में ऐसा ही उल्लेख किया है। अमर सिंह ने रसखान और घनानंद का तुलनात्मक अध्ययन में रसखान को रस की खानि बताया है।

चंद शेखर पांडे ने भी रसखान के कवित्त, दोहे सवैया और पदों का उल्लेख किया है। पुष्टिमार्ग में दीक्षित होने के बाद रसखान गले में कंठी माला धारण करने लगे थे और कृष्ण भक्ति के पद सवैया दोहा गाते फिरते थे। लोग कहते थे रसखान कोई रसखानि सुनाओ। लौकिक प्रेम से परालौकिक प्रेम में आए रसखान ने कृष्ण भक्ति के रस भरे अद्भुत सवैया, छंद और दोहे लिखे हैं। या लकुटी अरु कामरिया पर राज तिहूं पर को तजि डारो।।

रसखान के सवैया में श्रृंगार और प्रेम लबालब भरा हुआ है। रसखान होली के अवसर पर गोपीकाओं से कहते हैं की रास रचाओ होली के पखवारे में पतिव्रत धर्म भी छोड़ दो।

यहि पाख पतिव्रत ताक धरो जू।।

रसखान के दोहे भी रसभरे हैं-अकथ कहानी प्रेम की जानत लैली खूब। दो तन हूं जह एक भे, मन मिलाया महबूब।। कनक तंतु सी छीन अरु, कठिन खड़ग की धार। अति सूधो टेडों बहूरि प्रेम पंथ अनिवार।।

रसलीन का असली नाम गुलाम नबी था। गुलाम नबी के पुरखे सैयद वंश के थे और बिलग्राम हरदोई में आकर बस गए थे। रस लीन का रचनाकाल सन 1689 से 1750 के बीच का माना जाता है। रसलीन वीर योद्धा थे और दिल्ली की फौज के लिए लड़ते थे। सन् 1750 में रुहेलों और बंगश सेनाओं से वह युद्ध में एटा के पास राम चेतौनी के मैदान में मारे गए

थे। रसलीन नवाब सफदरजंग की सेना में थे ऐसा कहा जाता है। रसलीन के एक रिश्तेदार वीर अब्दुल जलील बृज भाषा के कवि थे। रसलीन ने ब्रज भाषा में कविता करना जलील से सीखा। सैयद बाकर के पुत्र गुलाम नबी उर्फ रसलीन ने हिंदी संस्कृत अरबी फारसी भाषा का ज्ञान प्राप्त किया। रसलीन ने श्रीमद् भागवत महापुराण का फारसी में अनुवाद पढ़ा था। वह अपनी ब्रजभाषा की रचना फारसी लिपि में लिखते थे। कहते हैं कि रसलीन ने अपनी एक अलग लिपि भी बनाई थी, जिसमें वह रचनाएं लिखते थे। शाहजहानाबाद दिल्ली में भी उनका निवास था। रसलीन की एक कृति रामपुर के राजकीय पुस्तकालय में रखी हुई है। रसलीन की एक कृति गंगा चंद्र सिंह के पास थी। गंगा चंद्र सिंह ने रसलीन पर शोध किया था। रसलीन कृत अंगद दर्पण में नख शिख वर्णन है। त्रिवेणी स्तुति में फुटकर छंद और सवैया हैं। रसलीन की एक पुस्तक रस प्रबोध है, जिसमें रस सिद्धांत पर चर्चा है। रसलीन के दोहे बहुत रस भरे और बिहारी लाल की तरह गहरे हैं।

राधा पद बाधा हरण, साधा करि रसलीन।/अंग अगाधा लखन को, कीनो मुकुर नवीन।।/ सो पवे या जगत में सरस नेह को भाय।/जो तन मन तें तिलन लों बालन हाथ बिकाय।।

सखिन संग नवला गई, प्रिय को मिलन निकेत। अरुण कमल सो मुख भयो, दिन हिम संक समेत।। रसलीन का लिखा एक पद भी मिलता है। यानी उन्होंने कीर्तन के लिए कृष्ण भक्ति के पद लिखे होंगे, जिनकी अभी खोज की जानी है। मुस्लिम कवियों के बारे में भारतेंदु हरिश्चंद्र ने लिखा है कि इन मुसलमान कवियान पर कोटिक हिंदू बारिये।। आलम, रहीम, रसखान, चांद बेगम, रसलीन सहित अनेक मुस्लिम कवियों ने हिंदी और ब्रज भाषा में छंद, कवित्त दोहे पद आदि लिखे हैं। इनका सम्मान किया जाना चाहिए।

कविता/गीत

पेड़

पेड़ काटकर जब हुई, कालोनी आबाद।
शुद्ध हवा की उस समय, आई बेहद याद।।

कटे पेड़ कहने लगे, मन में भरकर आह।
इस मानव के स्वार्थ से, कैसे करें निबाह।।

निजी स्वार्थ सब त्यागकर, अब तो समझो मीत।
पेड़ों में भी बज रहा, सांसों का संगीत।।

धूप-हवा में भी हमें, जीने का अधिकार।
हाथ जोड़कर कर रहे, नदी-पेड़ मनुहार।।

हमें मृत्यु दे आपको, मिला कौन ईनाम।
नन्हें पौधों ने लिखा, खत हम सबके नाम।।

बस पर्वत तक ही रहा, निर्मल नदी-प्रवाह।
पर मैदानी स्वार्थ ने, किया सभी कुछ स्वाह।।

जब शहरों की गंदगी, गई नदी के पास।
फफक-फफक कर रो पड़ी, पावन जल की प्यास।।

कैसे हो तब आचमन, कैसे जय-जयकार।
नदियां जब लेने लगें, नाले का आकार।।

बिना हमारे आपका, है सब व्यर्थ विकास।
हरे पेड़ कहते रहे, अपने मन का त्रास।।

चिड़िया जब उड़कर गई, आसमान की ओर।
वहां मिला केवल धुआं, वायुयान का शोर।।

पदचिन्हों पर शहर के, दौड़ रहा है गांव।
स्वप्न सरीखी हो गई, अब पीपल की छांव।।

वृक्ष लगाकर ही सखे, शुद्ध मिलेगी वायु।
तन-मन-जीवन स्वस्थ हों, होगी लंबी आयु।।

करें प्रदूषण से चलो, मिलकर यों मुठभेड़।
हरियाली चहुं ओर हो, सभी लगाएं पेड़।।

खुद से ही हम तुम करें, कुछ ऐसा अनुबंध।
पॉलीथीन से अब नहीं, रखें कभी संबंध।।

चलो करें कुछ कोशिशें, मिलकर ऐसी मित्र।
आने वाला कल बने, उजला और पवित्र।।

योगेन्द्र वर्मा 'व्योम'
मुरादाबाद

पिता तुम्हारा बोल रहा हूं

हेलो! हेलो! बेटे सुनते हो?
आख़िरत: मुंह खोल रहा हूं!
पिता तुम्हारा बोल रहा हूं!

माना हरदम व्यस्त बहुत ही रहते हो तुम,
जब भी पूछूं- मीटिंग में हूं, कहते हो तुम।
मिले वक्त तो, पत्नी-बच्चों में खो जाते,
मम्मी-पापा मगर पराये-से हो जाते।
टोको तो कहते हो अक्सर-
मैं रस में विष घोल रहा हूं!
पिता तुम्हारा बोल रहा हूं...!

रखे बैग में पैकेट पर पैकेट लाते हो
मां का चश्मा, मेरी दवा भूल आते हो।
खूब ठहाके कमरे से आते हैं तुम्हारे
हम बुड्ढे-बुढ़िया तन्हा तरसें बेचारे।
आखिर गलती कहां हो गई
अपना हृदय टटोल रहा हूं!
पिता तुम्हारा बोल रहा हूं!!

लगता जैसे हम दोनों तुम पर भारी हैं,
मगर तुम्हारी बेटे हम जिम्मेदारी हैं।
हम दोनों के सब सुख-दुख तुम पर निर्भर हैं
लेकिन घर में रहकर भी लगता बेघर हैं।
अपने क्या सचमुच अपने हैं-
मैं अपनापन तोल रहा हूं!
पिता तुम्हारा बोल रहा हूं!!

अशोक अंजुम
अलीगढ़

भाषा

ऐसा नहीं है कि
तुम्हें आती न हो
हमारी भाषा,
तुम हमारी भाषा
समझना नहीं चाहते हो,
शांति और समृद्धि
तुम्हें फूटी आंख भी नहीं सुहाती,
ऐसी दशा में
यह भाषा भला कहां भाती!

हमें बाध्य होकर
कुछ समय के लिए
प्रयोग में लानी पड़ती है—
तुम्हारी भाषा.
भूलो मत!
हम जानते हैं, तुम्हारे लिए ही
भाषा तुम्हारी भी,
वह कर देती है
संवादहीनता का अंत,
क्योंकि तुम
उसे समझ लेते हो तुरंत।

घनश्याम अवस्थी
गोण्डा

कहानी

क्रेजी ऑफ एजुकेशन

भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान के दक्षिण में आवास विकास कॉलोनी है। इसमें साजिद अली की दो मंजिला इमारत है, जिसमें संस्थान के वैज्ञानिक डॉक्टर एस.पी. शर्मा किराए पर रहते थे। उनके एक नौ वर्षीय लड़का था, जिसका प्यार का नाम बंटी था। साजिद अली के दो बच्चे थे। तीनों बच्चे एक ही इंग्लिश मीडियम स्कूल में पढ़ते थे। उनकी रुचियां बहुत मेल खाती थीं। वे एक साथ पार्क में खेलते और घूमते-फिरते थे। डॉक्टर इस सबको टाइम वेस्ट मानता था। वह सोचता था कि कक्षा में अव्वल आकर ही उनका बेटा प्रतिस्पर्धक दुनिया को पार कर सकेगा। अतः वह उसे खेलने पर डांटता था। साजिद अली एक स्कूल में प्रिंसिपल थे। वह कहते थे, 'बच्चे में शरीर और आत्मा होती हैं। वे पालतू जानवर नहीं है, जो पेट भरने के लिए मार सहते हैं। हर समय की टोका-टाकी और डांट से उनका मनमोहक स्वभाव बदल जाता है।' वह डॉक्टर को क्रेजी ऑफ एजुकेशन समझते थे। अतः उन्होंने अपने बच्चों को बंटी के साथ खेलने से मना किया। क्योंकि वह पढ़ाई में भी दिन पर दिन पिछड़ रहा था।

वाजिद हुसैन सिद्दीक़ी
बरेली

एक दिन रोटरी क्लब ने दीवाली मेले का आयोजन किया था। बंटी ने पापा से मेला दिखाने को कहा तो उसने कहा, 'मैं ऑफिस से लोटकर आऊं, तुम फर्स्ट डिवीजन पास होने की खुशखबरी सुनाना, मैं तुम्हें मेले ले चलूंगा। वह प्रथम श्रेणी प्राप्त नहीं कर सका था। रिजल्ट देखकर डॉक्टर ने उसे मेले न ले जाने का फरमान जारी कर दिया और अकेले मेले जाने की तैयारी में लग गया। 'अच्छा तो बंटी को भी अपने साथ ले जाओ,' श्रीमती जी ने अनुरोध किया। 'नहीं।' 'क्यों?' 'क्योंकि वह बदमाश है, निकम्मा है,' डॉक्टर ने टका- सा जवाब दिया और एक क्षण रुककर फिर बोला, 'पढ़ता नहीं है।' 'वाह, पढ़ना क्यों नहीं है, 'पत्नी ने अपने कंधे झटकते हुए विरोध प्रकट किया था, अभी दोपहर से पढ़ ही तो रहा था।' कुर्सी पर बैठा बंटी हड़बड़ा कर संभल गया। घुटनों पर अंग्रेजी की किताब रखी थी। वह आशापूर्ण निगाहों से अपनी मां और पिता की ओर देख रहा था। तभी पापा ने कठोरता से रूखे स्वर में उससे पूछा, 'अच्छा बता रुमाल को अंग्रेजी में क्या कहते हैं?' लड़के का सिर सख्ती से हिलाते हुए पूछा था डॉक्टर ने।

'क्या मेला दिखाने मुझे ले चलेंगे?' बंटी ने उम्मीद से पूछा। 'हैंडकर शेफ,' लड़के ने बिना सोचे समझे झिझकते हुए उत्तर दिया था और आगे की ओर झुकते हुए ऐसे खड़ा हो गया था जैसी अक्सर स्कूल में जवाब देते समय खड़े हो जाना चाहिए। 'हैंडकरशेफ... हैंडकरशैफ...' बंटी लगातार विषैली मुस्कुराहट के साथ उसका गलत जवाब दोहराए जा रहा था। 'तभी तो इतने कम नंबर आए हैं। तो फाइनल इम्तिहान में फेल होने का विचार है।' पापा ने लताड़ लगाई। डॉक्टर उत्तेजित स्वर में बोला, 'सरोज, ईश्वर की सौगंध मैं अब इसे स्कूल से उठाकर साइकिल के पंचर जोड़ने के धंधे में डाल दूंगा।' 'इधर आ मेरे बंटी।' मां बेटे को पुचकारती हुई बोली, 'इधर आ मेरे पास, अब बाद में पढ़ना।' 'तुम्ही लोग मेरी मृत्यु का कारण बनोगे। यह छोकरा मेरी जान लेकर ही दम लेगा,।' डॉक्टर पत्नी की बात बीच में ही काटते हुए क्रोध से बोला, 'हां, तुम्ही लोग मेरी मृत्यु का कारण बनोगे। मेरी मृत्यु।' वह निरंतर बोलते हुए आगे बढ़ता ही जा रहा था। 'पढ़ रहा हूं,' लड़का धीरे से हकलाते हुए फुसफुसाया था। अपने बचाव के लिए शर्मिंदगी से शून्य में देखते हुए बंटी की नजर एक छण के लिए अपनी मां से जा टकराई थी। पिता की ओर उसने देखा भी नहीं था। केवल अनुभव की थी, हर जगह, हर समय, एक घृणा। 'मत पढ़ तू... क्या फायदा तेरे पढ़ने का, डॉक्टर ने हवा में हाथ हिलाते हुए कहा, 'निकम्मे।' 'पढ़ तो रहा है, 'मां बीच में बचाव करते हुए बोली थी। उसने ममता से बंटी को अपनी छाती से लगा दिया और प्यार से उसका सिर थपथपाती हुई पति से कहने लगी, 'बेहतर होगा कि अब तुम इसे माफ कर दो और अपने साथ मेला दिखाने ले जाओ।' 'मैंने एक बार कमिटमेंट कर दिया तो फिर मैं अपनी भी नहीं सुनता।' वह बड़बड़ाते हुए वॉशरूम में नहाने चला गया। नहा कर निकला, उसने पत्नी से कहा,

'बुलाओ अपने लाडले को। मुझे उसे मैथ के सवाल करने को देना है।' मां कमरे में गई, वहां बेटे को न पाकर विचलित हो गई। उसने घर का कोना-कोना छान डाला पर वह नहीं मिला। 'ढीट हो गया है खेलने निकल गया होगा।' डॉक्टर ने क्रोध में कहा। मां सड़क पर इधर-उधर भागती रही। किसी ने डॉक्टर के इंस्टिट्यूट में फोन कर दिया। वहां का स्टाफ और छात्र, लड़के को ढूंढने के लिए रेलवे स्टेशन बस स्टैंड और भी न जाने कहां-कहां ढूंढते रहे फिर थक-हार कर वापस आ गए। रात के आठ बजे थे। साजिद अली कोचिंग पढ़ाकर घर लौटे। बंटी के कहीं चले जाने का समाचार सुनकर आह भरते हुए उन्होंने पत्नी से कहा, 'यह तो होना ही था।' फिर डॉक्टर से मिलने चले गए। डॉक्टर हैरान-परेशान बुरी तरह तरह हांफ रहा था और हाय बंटी, हाय बंटी कर रो रहा था। श्रीमती सरोज उत्तेजित मुद्रा में कमरे के फर्श पर लोट रही थी और हाथों को मसल रही थी। शाकिर अली ने उनसे पूछा, 'भाभी जी मुझे बताइए कहीं और जा सकता है?' उन्होंने रूंधे गले से कहा, 'भाई साहब, बालाजी के मंदिर और पीपल वाले तालाब के पास देख लीजिए।' उन्होंने घर में आकर पत्नी से टॉर्च देने को कहा। फिर साइकिल लेकर चलने लगे। पत्नी ने उन्हें टोका, 'स्कूटर से क्यों नहीं जाते?' 'अरे भाई तुम समझती नहीं हो, साइकिल से दाएं-बाएं हर तरफ बेफिक्री से देखा जा सकता है।' पुराना मंदिर घर से कुछ ही दूरी पर सुनसान में बना था। वह मंदिर पहुंचे। रात की आरती के बाद पंडित जी मंदिर में ताला लगाकर जा चुके थे। वह पीपल वाले तालाब पर जाने से हिचकिचा रहे थे। कारण था- उन्होंने वहां रात में किसी अंग्रेज की प्रेत आत्मा का चक्कर लगाने के किस्से सुन रखे थे। वह वापस लौटने लगे। तभी उनके मन में विचार आया, 'हो सकता है बंटी खुदकुशी के इरादे से तालाब पर गया हो, जिसका एहसास उसकी मां को हो गया हो।' उन्होंने तालाब की ओर साइकिल दौड़ा दी। रात गहराने लगी थी, मेंढकों की टर्र-टर्र, झींगरों की झुनझुनाहट, किसी पक्षी की तीखी आवाज, उन्हें अंग्रेज प्रेत आत्मा की सी लगती, फिर भी वह किसी उम्मीद से तालाब के किनारे बढ़ रहे थे। तभी टॉर्च के प्रकाश में उन्हें बंटी दिखा, जिसके हाथ में पेड़ की डंडी थी। उन्होंने वहीं से कहा, बेटा बंटी, मैं तुम्हारे दोस्त गुड्डू का पापा हूं। पहले तुम गुड्डू और गुड़िया के साथ खेलते थे, स्कूल भी साथ जाते थे। तुम डरना नहीं मैं तुम्हें लेने आया हूं। वह इन शब्दों को बार-बार दोहराए जा रहे थे और बिल्ली की तरह दबे पांव उसकी ओर बढ़ रहे थे। 'मैं घर नहीं जाऊंगा।' बंटी ने धीमे से कहा। तुम्हें पता है तुम्हारी मां बीमार चल रही है। वह तुम्हें याद करके रो रही है। क्या तुम चाहते हो तुम्हारी मां मर जाए? जब उन्हें यकीन हो गया, लड़का उनकी बातों में उलझ गया। उन्होंने एक लंबी छलांग लगाकर उसे पकड़ लिया और अपनी साइकिल की ओर बढ़ गए। उन्होंने लड़के को यकीन दिलाया उसके पापा उससे कुछ नहीं कहेंगे तो वह उनके साथ घर चलने को राजी हो गया। घर पहुंचने पर सभी ने एक ही प्रश्न किया। 'कहां मिला।' उन्होंने संक्षिप्त उत्तर दिया, 'मेरे बेटे के साथ खेलने चला गया था।' लड़के की मां उसे घर में ले गई।

डॉक्टर फिर से अपनी रौ में लौट आया। उसने ऊंचे स्वर में कहा, 'कल से इसकी पढ़ाई बंद।' शाकिर अली डॉक्टर को अपने घर में ले गए। उसे पूरा वृतांत सुनाया। फिर कहा मैंने बहुत बड़ा रिस्क लेकर दरवाजे पर खड़े लोगों से झूठ बोला और अपने बेटे को बिलावजह बदनाम किया। आप देखिए वह तो घर में बैठा पढ़ रहा है। मैंने तो यह सब इसलिए किया कि अगर बंटी पर एक बार घर से भागने का ठप्पा लग गया तो समाज उसे भगोड़ा कहकर फिर भागने पर मजबूर कर देगा। आप यह मानकर चलिए कि आपके बेटे ने खुदकुशी कर ली। खुदा ने आपको उसके बदले में यह पला- पलाया लड़का दिया है। हकीकत से रूबरू होकर डॉक्टर का पितृत्व प्रेम जाग गया। उसकी आंखों में आंसुओं का सैलाब फूट पड़ा। कुछ समय बाद डॉक्टर संस्थान के कैंपस में शिफ्ट हो गया था। पढ़ाई पूरी होने के बाद बंटी गैजेटेड ऑफीसर हो गया था। शाकिर अली कहते हैं, 'जब तक दुनिया में पेरेंट्स, क्रेजी ऑफ एजुकेशन हैं, यह होता रहेगा।'

लघुकथा

गुजारा

मुकदमा जीत जाने के बावजूद रमा उदास थी। अभी एक वर्ष ही तो बीता है विवाह को, कितनी खुश थी वह। सास, ननद, पति सभी कितने केयरिंग थे। जब वह अपनी सहेलियों के ससुराल से तुलना करती तो खुद को सौभाग्यशाली पाती। सब कुछ ठीक चल रहा था कि उसका ननद के हार पर दिल आ गया। रात में पति से बोली- 'मुझे करीब दो लाख रुपये चाहिए।' 'क्या?' गोविंद उछल से गए थे। 'इतना चौंक क्यों रहे हो?' 'पर इतना रुपया! क्या करोगी?' 'मुझे भी सौम्या जैसा हार लेना है।' 'अरे वह उसके ससुर उसके विवाह में लाए थे।' 'तो क्या मेरा विवाह नहीं हुआ था, मेरे ससुर को भी देना चाहिए था।' 'देखो तुम पागल मत बनो। हम उनकी हैसियत के नहीं हैं। अरे उनका भला हो जो हमारे यहां रिश्ता कर लिया।' 'पर तुम भी तो कमाते हो।' 'हां! पर मुझे अभी छुटकी का ब्याह करना है।' 'मुझे कुछ नहीं सुनना, मुझे चाहिए तो चाहिए।' बात-बात में बात बिगड़ती चली गई। रमा नाराज होकर मायके चली गई। गोविंद ने बहुत बार प्रयास किया पर रमा टस से मस न हुई। यदि कभी वह कुछ सोचना भी चाहती तो रमा की मां आग में घी डालने का काम करतीं। 'रमा तुम्हारे ससुराल वाले एक नंबर के कंजूस हैं। ये ऐसे नहीं मानेंगे, चल भरण-पोषण का मुकदमा दायर करते हैं। फिर जब न्यायालय का दबाव पड़ेगा और हर महीने दस-बारह हजार बतौर भरण-पोषण देना पड़ेगा, तब इनकी अकल ठिकाने आएगी।' रमा की मां बोली।

राजेश ओझा
गोण्डा

आज उसके मुकदमे में निर्णय आया था। मुकदमा दायर होने की तिथि से ग्यारह हजार रुपये प्रतिमाह बतौर भरण-पोषण देने का आदेश हुआ था। मां बहुत खुश थीं। "अरे तू मुह क्यों लटकाए है? चल वकील साहब को शुक्राना दें।' 'किस बात का शुक्राना मां! परिवार टूटने की खुशी का?' 'अरे तू तो बावली है। ग्यारह हजार रुपये प्रतिमाह पाएगी और मुकदमा दायर होने से आज तक का जो इकट्ठा हो गया है उससे हार भी आ जाएगा तेरा।' 'हार मिल जाने से या गुजारा-भत्ता मिल जाने से पति भी मिल जाएगा मां?' रमा ने देखा गोविंद भी फैसला सुनने आए थे। कितने दुबले हो गए हैं। चेहरे की रौनक गायब थी। कुछ पल देखती रही फिर डिग्री मां की तरफ फेंककर वह गोविंद को देखते हुए बोली- 'माफ करना मां! आप घर जाओ। मुझे गुजारा नहीं पति चाहिए।"

समीक्षा

टूटी शाख का पंछी

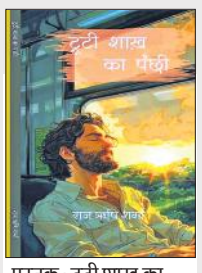

पुस्तक : टूटी शाख का पंछी
लेखक : राज ऋषि शर्मा
प्रकाशन-राजर्षि प्रकाशन, जम्मू
मूल्य- 198-/
समीक्षक- नवीन भारद्वाज

टूटी शाख का पंछी सिर्फ एक उपन्यास नहीं, बल्कि दिल को छू लेने वाला अनुभव है। यह कहानी शालिनी और नवीन के उस प्रेम की है, जो परिस्थितियों की आंधी से बार-बार टूटता है, लेकिन कभी मरता नहीं। यह उपन्यास हमें यह सिखाता है कि सच्चा प्यार सिर्फ पास रहने का नाम नहीं होता, बल्कि बिना कहे सब कुछ समझ लेने और ताउम्र किसी की यादों में जीते रहने का नाम होता है। कहानी की शुरुआत से ही पाठक पात्रों से भावनात्मक रूप से जुड़ जाता है। शालिनी की मासूमियत, नवीन का संकोच और दोनों के बीच का गहरा, लेकिन अनकहा प्रेम धीरे-धीरे दिल में उतरता चला जाता है। लेखक ने जिस बारीकी से इन भावनाओं को शब्दों में ढाला है, वह काबिल-ए-तारीफ है। यह केवल एक काल्पनिक कथा नहीं लगती, बल्कि ऐसा महसूस होता है जैसे हम किसी की असली जिंदगी को पढ़ रहे हों- इतनी सजीव, इतनी सच्ची। इस उपन्यास के कई हिस्से मेरी निजी जिंदगी से इस कदर मेल खाते हैं कि पढ़ते समय मुझे कई बार लगा कि मैं खुद ही इस कहानी का हिस्सा हूं। यह भावनाओं का एक तूफान है, जो धीरे-धीरे आपके मन में उतरता है और लंबे समय तक अपना असर छोड़ता है। यह उपन्यास हर उस इंसान को जरूर पढ़ना चाहिए, जिसने कभी सच्चे प्यार को जिया हो, महसूस किया हो या खोया हो। यह सिर्फ एक कहानी नहीं है, यह एक एहसास है, एक याद है और किसी के टूटे हुए सपनों की पुकार है, जिसे हर दिल महसूस कर सकता है।

साक्षात्कार के बीच हिंदी गजल

पुस्तक : साक्षात्कार के बीच हिन्दी ग़ज़लकार
लेखिका : डा. सीमा विजयवर्गीय
पृष्ठ सं. : 176
प्रकाशन : श्वेतवर्णा प्रकाशन, नोएडा
मूल्य 299/- रुपये
समीक्षक : डॉ.कृष्णकुमार 'नाज़'

डॉ. सीमा विजयवर्गीय द्वारा रचित 'साक्षात्कार के बीच हिंदी गजलकार' ऐसी पुस्तक है, जिसमें हिंदी गजल के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला गया है। इस पुस्तक में देश के प्रतिष्ठित 15 हिंदी गजलकारों- सर्वश्री बालस्वरूप 'राही', कृष्ण कुमार 'बेदिल', डा. कृष्णकुमार 'नाज', ज्ञानप्रकाश 'विवेक', अशोक रावत, देवेंद्र मांझी, विज्ञानव्रत, माधव कौशिक, शरद तैलंग, लवकुमार प्रणय, मासूम गाजियाबादी, ओमप्रकाश यती, विजय स्वर्णकार, देवमणि पांडेय और प्रो. वशिष्ठ अनूप के साक्षात्कार सम्मिलित हैं। इस पुस्तक में हिंदी गजल से संबंधित बहुत से महत्वपूर्ण प्रश्न और गजलकारों द्वारा दिए गए उत्तर उपलब्ध हैं। इसलिए यह पुस्तक हिंदी गजलकारों के लिए तो उपयोगी है ही, शोधार्थियों के लिए भी बहुत उपयोगी है। मैं जानता हूं, डॉ. सीमा विजयवर्गीय ने इस पुस्तक को साहित्यिक-समाज तक लाने में अथक परिश्रम किया है। वह इसमें सफल भी हुई हैं।

व्यंग्य

नैचुरल थेरेपी के अनेक लाभ

आजकल नैचुरल थेरेपी के अनगिनत लाभ देखने को मिल रहे हैं। इस सस्ती प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति से समाज का हर वर्ग लाभान्वित होता जा रहा है। एक्यूपंक्चर कराना, तेल मालिश कराना, फूंक मारना, अचानक सांस न ले पाने पर मुंह से किसी के मुंह में सांस देना आदि इत्यादि गतिविधियां नैचुरल थेरेपी के अंतर्गत आतीं हैं।

सुरेश सौरभ
लखीमपुर खीरी

जब से मैंने एक नेता जी को, पब्लिक प्लेस पर इस थेरेपी का प्रयोग, एक महिला पर करते हुए देखा है, उनको चर्चित होते हुए सोशल मीडिया पर देखा, परखा, तब से मेरे मन में इस थेरेपी के प्रति दिन प्रति दिन जिज्ञासा और बड़ी श्रृद्धा बढ़ती जा रही है। इस थेरेपी से संबंधित अनेक वेबसाइटों और पुस्तकों को रोज खंगालने लगा हूं। चाटने लगा हूं। मुझे याद आ रहा है, बरसों पहले मेरे बचपन में एक पानी वाले बाबा जी हमारे गांव में आए थे, वह पानी देकर सारी समस्याओं का समाधान चुटकी में करते थे। गांवों के लोग उन पर ततैया जैसे टूट पड़ते थे। अब मुझे पता चला, वह नैचुरल थेरेपी वाले बाबा थे। सड़कों के किनारे-किनारे फुटपाथों पर जगह-जगह खानदानी दवाखाने पाए जाते हैं। प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति द्वारा हर मर्ज का शर्तिया, गारंटी शुदा इलाज किया जाता है, यह उनके बैनरों-पोस्टरों में बडे-बड़े अक्षरों में लिखा होता है। बड़े-बूढ़े कहते हैं, ऐलोपैथिक की हर दवा में कोई न कोई साइड इफेक्ट जरूर होता है, पर प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति से कोई दुष्प्रभाव बॉडी पर नहीं होता, ऐसा खानदानी नैचुरल थेरेपी का लाभ उठा चुके, समझदार लोग कहते हुए पाए जा रहे हैं।

कुछ चिकित्सक तो विभिन्न प्रकार की मिट्टियों से प्राकृतिक चिकित्सा करते हैं। आदमी के नंगे शरीर पर मिट्टी का लेप करके उसे खुले प्राकृतिक वातावरण में, रोगमुक्त, शोक मुक्त होने के लिए छोड़ दिया जाता हैं।

हमारे शहर में एक पान वाला है, उसकी भी नैचुरल थेरेपी दुनियाभर में मशहूर है। उसकी दुकान की टैगलाइन है, "अब पान खाकर सारी समस्याएं दूर करिये।" वह पान लगाते वक्त बहुत स्फूर्ति से जल्दी-जल्दी चटपट-चटपट पहाड़ा पढ़ता है, "पान खाकर, अपना खोया प्यार पाएं बाबू जी, बिछड़ा साथी पाएं, बेऔलाद औलाद पाएं, जवानी में खून के आंसू जो रो-रो कर हलकान रहे हो, वह हमारा पान जरूर खाएं, फिर अमृत पाकर, मस्त होकर दुनिया जहान में छैयां छैयां गाएं, हमारे पास मर्दाना और जनाना दोनों के ताकत बढाने के पान उपलब्ध है। चाहे जैसी भी समस्या हो, बेखटक हमारे पास आएं, हर समस्या का समाधान हमारे कारामाती पान से पाएं। लोग बताते हैं सौ रुपए से लेकर लाखों रुपये तक के कारामाती पान उसके पास उपलब्ध हैं। नैचुरल थेरेपी के बढ़ते प्रचलन के कारण, वह कारामाती पान वाला भी अपने पान को नैचुरल थेरेपी बताने लगा है। ट्रेनों में, बसों में बंगाली बाबा के जादू के स्टीकर लगे होते हैं, जिसमें लिखा होता है, हर समस्या का समाधान चुटकी में, बस एक फोन मिलाइए घर बैठे-बैठे, अपने सारे दुख-दर्द दूर कीजिए। हमारी नैचुरल थेरेपी आपके जीवन की सारी निराशाएं पलक झपकते दूर कर देंगी।

शराब की लत एक मूक विनाश

आयुर्वेद में जीवन के चार पुरुषार्थों-धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष-की प्राप्ति के लिए स्वस्थ शरीर और संयमित जीवनशैली को अनिवार्य माना गया है। इस दृष्टिकोण से देखा जाए तो कोई भी ऐसा पदार्थ या व्यवहार, जो शरीर, मन और आत्मा के संतुलन को भंग करता है, वह आयुर्वेद की दृष्टि में अवांछनीय होता है।

डॉ .देवराज सिंह पंवार
असिस्टेंट प्रोफेसर अगद तंत्र एवं विधि वैद्यक विभाग रोहिलखंड आयुर्वेदिक मेडिकल कॉलेज एवं चिकित्सालय बरेली।

आज जीवन जीने की कला को हम भूलते जा रहे हैं, जिससे अनेक मानसिक और शारीरिक विकार उत्पन्न हो रहे हैं। मद्यपान (शराब का सेवन), जिसे आयुर्वेद में मदात्यय कहा गया है, इन्हीं जीवन शैली जन्य विकारों में से एक है। यह एक प्रकार का नशे का रोग है, जो व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक और सामाजिक स्वास्थ्य को नष्ट करता है। आयुर्वेद के शास्त्रीय ग्रंथों में बताया गया है कि (मद्य) बहुत तेजी से हृदय और मस्तिष्क तक पहुंचती है, जिससे यह शरीर के तीनों दोषों-वात, पित्त और कफ को दूषित करता है। इसका मतलब यह है कि व्यक्ति के स्वभाव, शारीरिक प्रकृति (दोषों की स्थिति) और मनःस्थिति के अनुसार मद्य (शराब) का प्रभाव बदलता है। जिस अवस्था में व्यक्ति मद्य का सेवन करता है, मद्य उसी अवस्था को और अधिक बढ़ा देती है। "मद्य का दुरुपयोग भय, शोक, क्रोध, रोग और मृत्यु तक का कारण बन सकता है।"

आयुर्वेद के अनुसार, "आहार या पदार्थ-औषधि भी बन सकता है और विष भी" यह इस बात पर निर्भर करता है कि उसे किस प्रकार, कितनी मात्रा में और किस परिस्थिति में लिया गया है। मद्यपान (शराब या नशीले द्रव्यों का सेवन) इसी श्रेणी में आता है, किंतु आयुर्वेद इसकी पूर्ण निंदा भी नहीं करता। इसकी उपयोगिता को औषधीय दृष्टिकोण से स्वीकारते हुए, इसके अनुचित प्रयोग से होने वाले गंभीर दुष्परिणामों को भी बताया गया है।

आज का युवा, तनावग्रस्त, वयस्क और यहां तक कि गृहस्थ जीवन जी रहे लोग भी शराब को समाधान मानकर जीवन का हिस्सा बना रहे हैं। जब पहली बार कोई व्यक्ति शराब को हाथ लगाता है, तब उसे लगता है कि यह बस एक मजा है, तनाव का इलाज है या दोस्तों की महफ़िल का हिस्सा है। लेकिन समय के साथ यह मज़ा ज़हर में बदल जाता है शरीर को बीमारियों से भर देता है, मानसिक संतुलन बिगाड़ देता है और इंसान को एक जीता-जागता खंडहर बना देता है। शराब पीने वाले लोगों में उच्च रक्तचाप, जठरांत्र संबंधी समस्या और मानसिक रोगों जैसी स्वास्थ्य समस्या अधिक होती है।

अधिक मद्यपान का प्रभाव

मदिरा जब अधिक मात्रा में पी जाती है तो ओज नष्ट हो जाता है। ओज के नष्ट हो जाने पर इसका आश्रय हृदय विकृत हो जाता है। हृदय के विकृत हो जाने पर जिन धातुओं का मूलमार्ग हृदय में है तथा सत्त्व, बुद्धि, इन्द्रियां, आत्मा जो हृदय में आश्रित होती हैं वे सभी विकृत हो जाती हैं।

प्राचीन आयुर्वेदिक ग्रंथों जैसे चरक संहिता, सुश्रुत संहिता और अष्टांग हृदयम् में मद्य को विभिन्न प्रकारों में विभाजित किया गया है, और उसके गुण, प्रभाव तथा सावधानियों का उल्लेख किया गया है। आयुर्वेद में मद्य को "मद्य", "सुरा", "सीधु", "मैरय", "आसव", "अरिष्ट" आदि नामों से जाना गया है। सुरा वह पेय है जो अनाज से तैयार किया जाता है, जबकि सीधु फलों से, विशेषकर अंगूर से तैयार किया जाने वाला मद्य होता है। मौदक गुड़ से और मैरय शहद से निर्मित होता है। अरिष्ट और आसव औषधियों के साथ किण्वित पेय होते हैं, जिन्हें आज भी आयुर्वेदिक औषधियों के रूप में प्रयोग किया जाता है, जैसे दशमूलारिष्ट, अशोकारिष्ट, चंद्रप्रभावटी आदि। ये सब नियंत्रित मात्रा में औषधि स्वरूप उपयोगी होते हैं।

आयुर्वेद के अनुसार मद्य के गुण उष्ण (गर्म), तीक्ष्ण (तीव्र), लघु (हल्का), रूक्ष (शुष्क) और अग्निवर्द्धक (पाचन अग्नि को प्रज्ज्वलित करने वाला) होते हैं। यह वात-कफ को कम करता है, परंतु पित्त दोष को बढ़ाने की प्रवृत्ति रखता है। मद्य का सेवन सीमित मात्रा में, उचित समय पर और उचित व्यक्ति द्वारा किया जाए तो यह भूख बढ़ाने वाला, थकान दूर करने वाला, निद्राजनक और मन को प्रसन्न करने वाला होता है। किंतु इसकी अति मात्रा या अनुचित सेवन करने पर यह मनोविकार, भ्रम, स्मृति हानि, क्रोध, हृदय रोग, पाचन विकार, यकृत रोग और असमय वृद्धावस्था का कारण बन सकता है। विशेष रूप से यह रक्त धातु और यकृत (लिवर) को गंभीर रूप से प्रभावित करता है। आधुनिक चिकित्सा विज्ञान भी स्वीकार करता है कि शराब का अधिक सेवन लिवर सिरोसिस, हृदय रोग, अवसाद, पाचन विकार, मस्तिष्क विकार और कैंसर जैसी बीमारियों का कारण बन सकता है। इस प्रकार आधुनिक विज्ञान और आयुर्वेद, दोनों मद्य के दुष्परिणामों को लेकर एकमत हैं। मद्यपान से व्यक्ति की सत्त्व शक्ति, स्मृति, विवेक और धर्मबुद्धि क्षीण होती जाती है। यह धीरे-धीरे व्यक्ति को सामाजिक, मानसिक और आध्यात्मिक रूप से पतन की ओर ले जाता है। ऐसी स्थिति में आयुर्वेद केवल चेतावनी नहीं देता, बल्कि नशा मुक्ति के उपचार भी प्रदान करता है। आयुर्वेदिक जड़ी-बूटियों, पंचकर्म चिकित्सा और मानसिक संतुलन को बढ़ाने वाले उपायों के माध्यम से व्यसन ग्रस्त व्यक्तियों को राहत पहुंचाई जा रही है।

दुष्प्रभाव और आयुर्वेदिक विश्लेषण

वात दोष में वृद्धि : शरीर में कंपन, अनिद्रा, घबराहट स्नायविक कमजोरी।

पित्त दोष में वृद्धि : क्रोध, चिड़चिड़ापन, अल्सर, लिवर रोग

त्वचा पर दाने, सिरदर्द, आंखों में जलन

कफ दोष में असंतुलन : मंदाग्नि (पाचन कमजोर), थकावट, अवसाद, मोटापा, आलस्य, अव्यवस्थित जीवनशैली।

नशा मुक्ति के उपाय

नशा मुक्ति के लिए आयुर्वेद तीन मुख्य स्तम्भों पर आधारित चिकित्सा पद्धति प्रस्तुत करता है-शरीर की शुद्धि, मन का संतुलन एवं आचार-संयम का पालन। सबसे पहले शरीर से टॉक्सिन्स को हटाने हेतु औषधीय चिकित्सा की जाती है। इसमें अश्वगंधा, ब्राह्मी, जटामांसी, वाचा, शंखपुष्पी, गुडुची और त्रिफला जैसी औषधियाँ दी जाती हैं। अश्वगंधा मानसिक बल व आत्मविश्वास बढ़ाता है, ब्राह्मी स्मृति व मस्तिष्क को सशक्त करता है, जटामांसी अनिद्रा व क्रोध को नियंत्रित करता है, वाचा इच्छाशक्ति व निर्णय क्षमता में वृद्धि करता है, शंखपुष्पी न्यूरोकेमिकल संतुलन बनाकर शराब की लत में कमी लाता है, गुडुची लिवर व रक्त शुद्धि में सहायक होता है, जबकि त्रिफला सम्पूर्ण शरीर को डिटॉक्स करता है।

पंचकर्म चिकित्सा द्वारा शरीर को भीतर से शुद्ध किया जाता है। वमन द्वारा पेट व मन की गहराई से शुद्धि की जाती है। विरेचन से यकृत व रक्त दोष दूर होते हैं। नस्य द्वारा मस्तिष्क शुद्ध किया जाता है। बस्ती से शरीर व मन दोनों का संतुलन पुनः स्थापित होता है। विशेष रूप से शिरोधारा चिकित्सा मानसिक शांति व तनावमुक्ति में अद्भुत प्रभाव दिखाती है, जो शराब छुड़ाने में अत्यंत सहायक होती है।

साथ ही मानसिक व आध्यात्मिक चिकित्सा भी अत्यंत आवश्यक है। ध्यान, प्राणायाम, योगासन, मंत्रजाप व सात्विक चिंतन नशा मुक्त जीवन की दिशा में व्यक्ति को दृढ़ बनाते हैं। योग के शशांकासन, भुजंगासन, शवासन आदि आसनों से मन व शरीर को स्थिरता प्राप्त होती है। प्राणायाम से मानसिक शांति व आत्मबल में वृद्धि होती है। मंत्रजाप-जैसे "ॐ शांति"-से अंतर्मन को शांति मिलती है।

आहार चिकित्सा में सात्विक आहार का विशेष महत्व है। फल, ताजे हरे पत्तेदार सब्जियां, गौ-दूध, गौ-घृत, हल्दी, गिलोय, आंवला, एलोवेरा आदि पदार्थ सेवन करने से लिवर शुद्ध रहता है व शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है। तैलीय, तीखा, खट्टा, बासी भोजन पूर्णतः वर्जित किया जाता है।

व्यवहार चिकित्सा द्वारा रोगी को परामर्श व परिवार के सहयोग से मानसिक सहारा दिया जाता है। चिकित्सकीय परामर्श रोगी के विचार, आदत व भावनाओं को सकारात्मक दिशा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इस प्रकार आयुर्वेद केवल शरीर का नहीं, वरन् मन, आत्मा व व्यवहार का भी समग्र उपचार करता है। यदि व्यक्ति संयम, आहार शुद्धि, मानसिक शांति व औषधीय चिकित्सा का पालन करे, तो किसी भी प्रकार के नशे से पूर्ण मुक्ति प्राप्त कर स्वस्थ, संतुलित व आनंदमय जीवन व्यतीत कर सकता है।

फिल्म जगत

आनंद की सवारी हाउसफुल 5

सबसे पहले ही बता दूं कि ये फैमिली मूवी नहीं हैं बल्कि एडल्ट कॉमेडी है। कुछ दिन पहले मैंने हाउसफुल फ्रेंचाइजी का 5वां भाग देखा, सही बताऊं तो मुझे इस फिल्म को लेके थोड़ा डाउट था कि फिल्म सही में कॉमेडी होगी भी या नहीं लेकिन जब मैंने देखा कि थिएटर में फिल्म को देखते हुए लोग ठहाके मारके हस रहे थे। इस फिल्म की कहानी वही है जो ट्रेलर में दिखाई गई हैं, अरबपति रणजीत के निधन के बाद उनकी प्रॉपर्टी के तीन दावेदार (3 जॉली) आ जाते हैं लेकिन इस बीच किसी का मर्डर हो जाता हैं तो उस मर्डर की गुत्थी सुलझाने को बड़े ही हंसी मजाक में हमे दिखाया गया है, मर्डर मिस्ट्री भी चलती रहती हैं और कॉमेडी भी, दोनों का तालमेल अच्छा बैठाया गया है।

फिल्म का पहला आधा काफी अच्छा है, पहला सीन तो एक बार किसी हॉरर फिल्म जैसा लगता है लेकिन उसके बाद जैसे जैसे कैरेक्टर्स की एंट्री होती जाती है वैसे वैसे मजा बढ़ता जाता हैं, साथ ही दो गाने हैं जो सुनने में अच्छे हैं लेकिन देखने में ओर भी मजा देते है मतलब गानों में ग्लैमर का बढ़िया इस्तेमाल किया गया है। दूसरा भाग शुरू होते ही एक बार को स्लो लगता हैं लेकिन जल्दी ही अपनी लय में आ जाता हैं हंसते हंसाते हुए एंड तक लेके जाता हैं। फिल्म में एक्टर्स की पूरी फौज है लेकिन जब बात कॉमेडी की आती हैं तो अक्षय कुमार के आस पास कोई नहीं टिकता, हां उनके बाद रितेश देशमुख के सभी सीन लाजवाब हैं, उनका कन्फ्यूजन इन थिंकिंग स्टाइल ठहाके मारने को मजबूर करता है। श्रेयस तलपडे को कम सीन मिले हैं लेकिन जितने भी मिले है उनमें वो खुश करते है, बाकी सबका काम भी अच्छा है। फिल्म में कई सीन और डायलॉग डबल मीनिंग है लेकिन वह ऐसे फिट बैठते है कि हंसते हंसते पेट दुख जाता हैं। फिल्म का प्रोडक्शन हाई क्लास रखा गया है जो साफ दिखता है, गाने 4 है लेकिन लास्ट वाला बेवजह ठूंसा गया है, बाकी शुरू के तीनों गाने अच्छे हैं और इनमें स्टोरी भी आगे बढ़ती रहती है। क्लाइमैक्स जैसे थोड़ा लंबा खींचा गया है, लगता हैं कि अब खत्म लेकिन फिर आगे बढ़ जाता हैं लेकिन लगातार हंसाए रखता हैं, क्लाइमैक्स में हाउसफुल फ्रेंचाइजी के एक हीरो का कैमियो है। वैसे तो मैं अक्षय कुमार का फैन हूं लेकिन उनका एंट्री सीन जीम कैरी की ऐस वेंच्युरा मूवी से कॉपी लगता हैं, उस सीन में अक्षय जीम कैरी को ही कॉपी कर रहे है। फिल्म के कई सीन आपको बासी लग सकते है और कई सोशल मीडिया से प्रेरित लग सकते है। कुल मिलाकर यह एक पैसा वसूल फिल्म है जो आपको थिएटर में ठहाके मारने को मजबूर करेगी और आपको एक अच्छी आनंद की सवारी पर लेकर जाएगी।

समीक्षक- अंकित मेहता

खाना खजाना

क्रिस्पी नगेट्स

हम पार्टियों के लिए एक खास स्टार्टर बनाने जा रहे हैं, आलू नगेट्स, इन्हें स्टार्टर के साथ-साथ आप स्नैकस के रूप में भी परोस सकते हैं। इन्हें बनाना बहुत ही आसान होता है और ये झटपट बनकर तैयार हो जाते हैं। ये बहुत ही स्वादिष्ट होते हैं, इतने की आलू नगेट्स खत्म हो जाएंगे मगर इन्हें खाने की इच्छा नहीं खतम होगी। तो आप भी इस आसान विधि के साथ आलू नगेट्स बनाएं और अपने परिवार के साथ इसके स्वाद का आनंद लें।

अंकिता जोशी
फूड ब्लॉगर

सामग्री

- उबले आलू - 5 (300 ग्राम)
- चावल का आटा- 1/2 कप
- नमक - 1 छोटी चम्मच
- लाल मिर्च - 1 छोटी चम्मच
- जीरा - 1/2 छोटी चम्मच
- हरा धनिया
- तेल- 2 छोटी चम्मच
- तेल तलने के लिए

बनाने की विधि

सबसे पहले आप एक बाउल में उबले हुए आलू को बारीक वाले ग्रेटर से ग्रेट कीजिए। अब उसी बाउल में चावल का आटा, नमक, लाल मिर्च, जीरा और थोड़ा हरा धनिया डालिए। इन्हें अच्छे से मिलाते हुए गूंधिये। गुंथ जाने पर इसमें 2 छोटी चम्मच तेल डाल कर अच्छे से मसल कर इसे स्मूद कीजिए। फिर इसे ढंक कर 5 मिनट के लिए रख दीजिए। फिर एक बोर्ड पर थोड़ा तेल डाल कर फैलाएं, फिर डो को बोर्ड पर रख कर इसके 2 हिस्से कीजिए। एक हिस्से को बाउल में वापस रख कर, बचे हुए हिस्से को हाथ में तेल लगा कर रोल करके बड़ा कीजिए। फिर चाकू से इसके 1-1 सेमी के पीस काटिये। अब एक पीस को हल्का सा दबा कर गोल करके हथेली से हल्का दबाएं। कांटे वाले चम्मच की मदद से इसके चारों तरफ से निशान बनाएं। इसी तरह सभी पीस पर डिजाईन बना कर ट्रे पर रखिये। दूसरे हिस्से के भी इसी तरह पीस बना कर डिजाईन बना लीजिए। फिर एक पेन में तेल गरम कीजिए, तेल मीडियम-हाई गरम होना चाहिए। गरम तेल में जितने नगेट्स आ पाएं डाल कर 1-2 मिनट तलने दीजिए। फिर फ्लेम को कम करके इन्हें पलट-पलट कर दोनों ओर से गोल्डन ब्राउन होने तक तलिये। फिर इन्हें निकाल कर बाकी भी इसी तरह तल कर तैयार कर लीजिए। इस तरह आलू नगेट्स बनकर तैयार हो जाएंगे। इन्हें अपनी मनपसंद डिश के साथ परोसिए और इनके स्वाद का आनंद लीजिए।

विशुद्ध भारतीय फल जामुन

भारत को जम्बू द्वीप के नाम से भी जाना जाता है और यह नाम जामुन के वजह से है। आश्चर्य की बात तो है कि किसी फल के वजह से किसी देश का नामकरण किया गया। दरअसल जामुन के कई नाम है और उन्हीं में से एक नाम है जम्बू। भारत में जामुन की बहुतायत रही है। हमारे देश में इसकी पेड़ों की संख्या लाखों-करोड़ों में है और शायद इसी कारण से यह फल हमारे देश की पहचान बन गया।

हरिशंकर सुमेर
ग्रामीण कृषि विस्तार अधिकारी, छत्तीसगढ़

जामुन के फायदे

- पाचन क्रिया के लिए जामुन बहुत फायदेमंद होता है। जामुन खाने से पेट से जुड़ी कई तरह की समस्याएं दूर हो जाती हैं।
- मधुमेह के रोगियों के लिए जामुन एक रामबाण उपाय है। जामुन के बीज सुखाकर पीस लें। इस पाउडर को खाने से मधुमेह में काफी फायदा होता है।
- मधुमेह के अलावा इसमें कई ऐसे तत्व पाए जाते हैं जो कैंसर से बचाव में कारगर होते हैं। इसके अलावा पथरी की रोकथाम में भी जामुन खाना फायदेमंद होता है। इसके बीज को बारीक पीसकर पानी या दही के साथ लेना चाहिए।
- अगर किसी को दस्त हो रहे जामुन को सेंधा नमक के साथ खाना फायदेमंद रहता है। खूनी दस्त होने पर भी जामुन के बीज बहुत फायदेमंद साबित होते हैं।
- दांत और मसूड़ों से जुड़ी कई समस्याओं के समाधान में जामुन विशेषतौर पर फायदेमंद होता है। इसके बीज को पीस लीजिए। इससे मंजन करने से दांत और मसूड़े स्वस्थ रहते हैं।

रामायण ओर महाभारत में भी इसका विशेष उल्लेख रहा है। भगवान राम ने अपने 14 वर्ष के वनवास में मुख्य रूप से जामुन का ही सेवन किया था वहीं श्रीकृष्ण के शरीर के रंग को ही जामुनी कहा गया है। संस्कृत के श्लोकों में अक्सर इस नाम का उच्चारण आता है।

जामुन विशुद्ध रूप से भारतीय फल है। भारत का हर गली-मोहल्ला इसके स्वाद से परीचित हैं। जामुन एक मौसमी फल है। खाने में स्वादिष्ट होने के साथ ही इसके कई औषधीय गुण भी हैं। जामुन अम्लीय प्रकृति का फल है पर यह स्वाद में मीठा होता है। जामुन में भरपूर मात्रा में ग्लूकोज और फ्रुक्टोज पाया जाता है। जामुन में लगभग वे सभी जरूरी लवण पाए जाते हैं जिनकी शरीर को आवश्यकता होती है।

जामुन के लकड़ी का भी कोई जबाव नहीं है। एक बेहतरीन इमारती लकड़ी होने के साथ इसके पानी मे टिके रहने की कमाल शक्ति है। अगर जामुन की मोटी लकड़ी का टुकड़ा पानी की टंकी में रख दे तो टंकी में शैवाल या हरी काई नहीं जमती सो टंकी को लम्बे समय तक साफ़ नहीं करना पड़ता। प्राचीन समय में जल स्रोतों के किनारे जामुन की बहुतायत होने की यही कारण था इसके पत्ते में एंटीबैक्टीरियल गुण होते हैं जो कि पानी को हमेशा साफ रखते हैं। कुए के किनारे अक्सर जामुन के पेड़ लगाए जाते थे।

जामुन की एक खासियत है कि इसकी लकड़ी पानी में काफी समय तक सड़ती नहीं है। जामुन की इस खूबी के कारण इसका इस्तेमाल नाव बनाने में बड़े पैमाने पर होता है।

जामुन औषधीय गुणों का भण्डार होने के साथ ही किसानो के लिए भी उतना ही अधिक आमदनी देने वाला फल है। नदियों और नहरों के किनारे मिट्टी के क्षरण को रोकने के लिए जामुन का पेड़ काफी उपयोगी है। अभी तक व्यावसायिक तौर पर योजनाबद्ध तरीके से जामुन की खेती बहुत कम देखने को मिलती हैं। देश के अधिकांश हिस्से में अनियोजित तरीके से ही किसान इसकी खेती करते हैं। अधिकतर किसान जामुन के लाभदायक फल और बाजार के बारे में बहुत कम जानकारी रखते हैं, शायद इसी कारणवश वो जामुन की व्यावसायिक खेती से दूर हैं। जबकि सच्चाई यह है कि जामुन के फलों को अधिकतर लोग पसंद करते हैं और इसके फल को अच्छी कीमत में बेचा जाता है।

जामुन की खेती में लाभ की असीमित संभावनाएं हैं। इसका प्रयोग दवाओं को तैयार करने में किया जाता है, साथ ही जामुन से जेली, मुरब्बा जैसी खाद्य सामग्री तैयार की जाती है। सबसे खास बात कि जामुन हम भारतीयों की पहचान रही है अतः इस वृक्ष के संरक्षण और संवर्धन में हम सभी को अपना योगदान देना चाहिए।

कनखजूरा

"जितना कमजोर पर उतना ही खतरनाक" कनखजूरे को दिखाते हुए यह टैगलाइन भी है। कहानी में इसे लगातार सामने रखने की कोशिश दिखती है। कनखजूरा एक इजरायली सीरीज "मैगपाई" का ऑफिशियल अडेप्शन हैं पर, शायद दो अलग अलग देशों, संस्कृतियों और फिल्मकारों के लोकप्रियता सुनिश्चित करने के तकाजों के कारण शीर्षक बदल गए हैं। मैगपाई यानी नीलकंठ जो सारे जहर को गले में रखे रहे और कनखजूरा जो मासूम, कमजोर बन कर घातक वार कर सके। मैंने मूल यानी मैगपाई देखी नहीं, इसलिए बदलाव कहां कितना क्यों हुआ होगा, नहीं पता। पर रौशन मैथ्यू ने कनखजूरा नाम सार्थक कर दिया है अपने बेमिसाल अभिनय से। बचपन से ही अपने बोलने में हकलाने के कारण छोटा भाई बड़े भाई और उसके मित्रों में मजाक का पात्र बना रहा और उनके लिए जेल भी गया। जेल से जब वह लौटा तो भी उसे उस भाई और मित्र मंडली ने जो अब बड़ा बिल्डर बन जाने के ख्वाब देख रही हैं कोई अच्छा बर्ताव नहीं दिखाया। इसीलिए छोटे भाई के अंदर का जहर किस तरह से उन सबसे बदला लेता है यही कहानी है, जो मुझे सामान्य ही लगी। परंतु, इस में दिखाए गए चरित्र जिनमें मुख्य पात्र रौशन मैथ्यू फिर सच, झूठ, प्रेमी और बड़ा बने रहने की उधेड़बुन में फंसा हुआ मोहित रैना, पुलिस कमिश्नर के रोल में कड़क और वास्तविकता से लवरेज हिबा शाह, फिर अपने विशिष्ट व्यक्तित्व को शारीरिक और मानसिक रूप में जीने वाली "लड़की" के रोल में त्रिनेत्र हालदार और फिर योजना बनाने वाले वकील के रोल में निनाद कामत मुझे इसी क्रम में अच्छे लगे। बाकी सब सामान्य है। चरित्रों पर पर्याप्त कार्य किया गया है जिसके कारण कहानी कुछ अलग नहीं होते हुए भी अच्छी लगती रहती है। लोकेशन गोवा में रखी है पर वह कम और कम सुंदर दिखता है जो एक कमी खली है। कैमरा वर्क, अगर उसके मूल्यांकन की दृष्टि से देखेंगे तो बस सामान्य है। घटनाओं की गति भी ठीकठाक है। वैसा ही पार्श्व संगीत भी है। असली खेल रौशन मैथ्यू से जीत लिया है। अगर आप चरित्रों की अदाकारी में रुचि रखते हों और कहानी के अंदाजा लग जाने वाले उलझाव को मुआफी दे सकें तो कनखजूरा की आठ एपिसोड्स आपको निराश नहीं करेंगी।

समीक्षक- ब्रज राज नारायण सक्सेना

साप्ताहिक राशिफल

-पं .मनोज कुमार द्विवेदी
ज्योतिषाचार्य, कानपुर

मेष
इस सप्ताह आप मानसिक रूप से थोड़ा अस्थिर महसूस कर सकते हैं। कुछ योजनाएं तय समय पर पूरी न हो पाने से असहजता हो सकती है। कार्यस्थल पर दबाव महसूस होगा, और ऊर्जा में उतार-चढ़ाव रहेगा। पुराने रोग फिर से उभर सकते हैं, खासकर पेट और रक्त संबंधी समस्याएं।

वृष
इस सप्ताह रुके हुए काम गति पकड़ेंगे और सामाजिक जीवन में सम्मान बढ़ेगा। घर-परिवार में सहयोग मिलेगा और आपकी ऊर्जा सकारात्मक रहेगी। आर्थिक दृष्टि से लाभ के संकेत हैं। प्रेम संबंधों में पहले की तुलना में अधिक भावनात्मक जुड़ाव महसूस होगा।

मिथुन
इस सप्ताह आपका मन स्थिर नहीं रहेगा। दूसरों की समस्याओं में उलझने से अपने काम पिछड़ सकते हैं। व्यापार में मंदी का असर हो सकता है और कोई गलत आर्थिक निर्णय नुकसान पहुंचा सकता है। विद्यार्थी वर्ग को एकाग्रता की कमी का सामना करना पड़ सकता है।

कर्क
इस सप्ताह आपके लिए अच्छे अवसर दस्तक दे सकते हैं। बेरोजगारों को रोजगार और नौकरी में बदलाव चाहने वालों को बेहतर ऑफर मिल सकता है। धन संबंधी मामलों में राहत मिलेगी। पारिवारिक रिश्तों में सुधार होगा और प्रेम संबंधों में स्थायित्व आएगा।

सिंह
इस सप्ताह की शुरुआत में भावनात्मक तनाव रह सकता है। करीबी व्यक्ति से मतभेद हो सकते हैं, जिसे संवाद से सुलझाना जरूरी होगा। करियर में सावधानी बरतें और किसी भी तरह की लापरवाही से बचें। छात्रों को लक्ष्य पाने के लिए अतिरिक्त प्रयास करने होंगे। छुपे शत्रुओं से सतर्क रहें।

कन्या
यह सप्ताह आपके लिए थोड़ा थकाने वाला हो सकता है। मौसमी बीमारियां या पुरानी समस्याएं उभर सकती हैं। कामकाज में मनचाही सफलता नहीं मिलने से मन खिन्न रहेगा। आर्थिक मामलों में सावधानी बरतें, खासकर उधार और निवेश से दूरी रखें। प्रेम संबंधों में अपेक्षा बढ़ने से टकराव हो सकता है।

तुला
इस सप्ताह अस्थिरता और खर्चों से बचना जरूरी होगा। सप्ताह की शुरुआत थोड़ी चुनौतीपूर्ण हो सकती है। कार्यक्षेत्र में असहयोग और प्रतिस्पर्धा की स्थिति बनेगी। अचानक खर्चों से वित्तीय दबाव बढ़ सकता है। प्रेम और दांपत्य जीवन में संतुलन बनाए रखने के लिए खुलकर संवाद जरूरी होगा।

वृश्चिक
इस सप्ताह मजबूत इच्छाशक्ति से बड़ी कामयाबी संभव। आप अपनी योजनाओं को बेहतरीन ढंग से अमल में ला सकते हैं। कामकाज में सफलता मिलेगी और नई जिम्मेदारियां आपको पहचान दिलाएंगी। व्यापार में भी लाभ के अच्छे संकेत हैं। रिश्तों में पहले से अधिक स्थायित्व और भावनात्मक जुड़ाव महसूस होगा।

धनु
इस सप्ताह की शुरुआत यात्राओं और कार्य संबंधी भागदौड़ से भरी रह सकती है। अपेक्षित लाभ न मिलने से निराशा हो सकती है। पढ़ाई या नौकरी में ध्यान भटक सकता है। प्रेम में नए रिश्ते बन सकते हैं, लेकिन सोच-समझकर आगे बढ़ें। पारिवारिक माहौल को संतुलित बनाए रखने के लिए विश्वास और विनम्रता ज़रूरी होगी।

मकर
इस सप्ताह करियर और धन दोनों में अनुकूलता।यह सप्ताह आपके लिए शुभ रहेगा। अटके काम पूरे होंगे और नई संभावनाओं के द्वार खुलेंगे। धन की स्थिति में सुधार होगा और संतान से जुड़ी कोई खुशखबरी मिल सकती है। नौकरी में पदोन्नति के योग हैं। पारिवारिक और सामाजिक स्तर पर आपका मान-सम्मान बढ़ेगा।

कुंभ
इस सप्ताह कार्यक्षेत्र में तालमेल बनाकर चलने में ही लाभ है। कामकाज में मनचाही सफलता नहीं मिलेगी, लेकिन धैर्य से हालात सुधर सकते हैं। व्यापारियों को भी शुरुआती दिनों में कम लाभ मिलेगा, लेकिन सप्ताह के अंत तक स्थितियां सुधरेंगी। प्रेम में भरोसा रखें, लेकिन हद से ज्यादा दखल से बचें।

मीन
इस सप्ताह की शुरुआत में आपको सकारात्मक परिणाम मिलेंगे। जो कार्य आप लंबे समय से टाल रहे थे, अब पूरे हो सकते हैं। आर्थिक स्थिति मजबूत होगी और परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। प्रेम और दांपत्य जीवन में मधुरता बढ़ेगी। विदेश यात्रा या उससे जुड़ी कोई शुभ सूचना भी मिल सकती है।

वर्ग पहेली (काकुरो)

काकुरो पहेली वर्ग पहेली के समान हैं, लेकिन अक्षरों के बजाय बोर्ड अंकों (1 से 9 तक) से भरा है। निर्दिष्ट संख्याओं के योग के लिए बोर्ड के वर्गों को इन अंकों से भरना होगा। आपको दी गई राशि प्राप्त करने के लिए एक ही अंक का एक से अधिक बार उपयोग करने की अनुमति नहीं है। प्रत्येक काकुरो पहेली का एक अनूठा समाधान है।

काकुरो 13

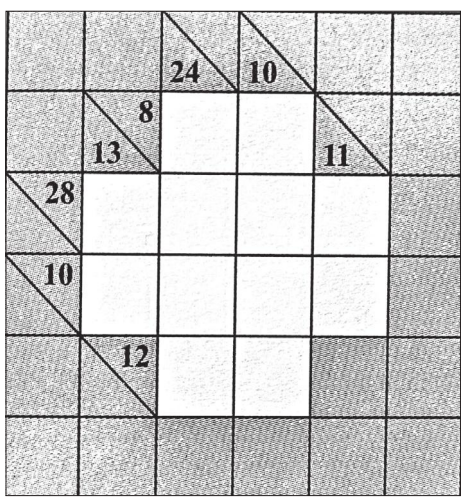

काकुरो 12 का हल

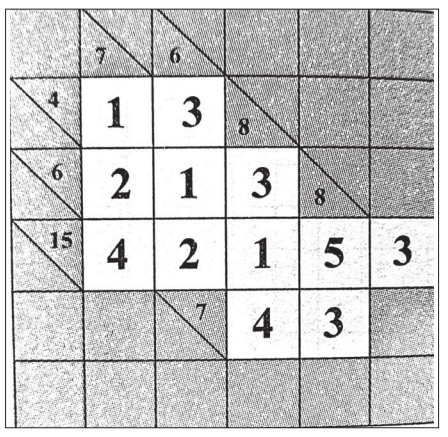

जोक्स ऑफ द डे

गप्पू अपने एक दोस्त से बोला
यार पप्पू आज पहली बार बर्तन धोने का फायदा हुआ
पड़ोसन ने मेरी बीवी से बोला - काश ये मेरे पति होते
बीवी मुझसे बोली - आज के बाद आप
बर्तन बिल्कुल नहीं धोओगे, मैं हूं न।

पति- कहां गई थी जानेमन
पत्नी-मॉल गई थी जानू
पति- क्या सब ली बाबू
पत्नी- एक हेयर क्लिप और 45 सेल्फी।

वैध नवाब न मिला तो भोपाल पर बेगमों का रहा शासन

भोपाल नगर की स्थापना और विकास का श्रेय परमार राजाओं को जाता है। चालुक्य वंशीय सोमेश्वर प्रथम के विरुद्ध पराजय के परिणाम स्वरूप राजा भोज को उज्जैन, धार और मांडू छोड़ने को बाध्य होना पड़ा। धार छोड़ने के पश्चात उन्होंने भोपाल से 20 किमी दूर भोजपुर को अपनी गतिविधियों का केंद्र बनाया। राजा भोज ने यहां सबसे बड़े शिवलिंग की स्थापना कर एक शिवमंदिर का निर्माण कराया। उन्होंने भोपाल में पुराने किले का भी निर्माण कराया। इस प्रकार भोजताल, भोजपुर के शिवमंदिर और पुराने किले के निर्माण के साथ ही भोपाल नगर अस्तित्व में आया। राजाभोज की मृत्यु के कारण कुछ समय के लिए मालवा परमारों के हाथ से निकल गया, पर राजा जय सिंह ने पुन: परमारों को मालवा की गद्दी पर स्थापित किया।

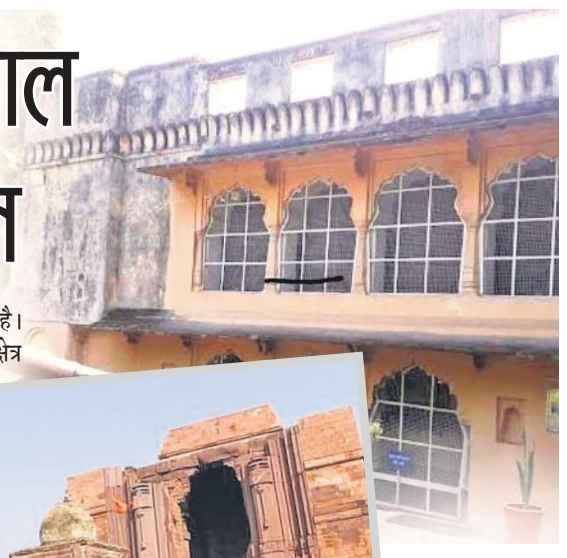

रूपेश उपाध्याय
अपर-कलेक्टर, सागर

मालवा में परमारों की कीर्ति को पुनर्स्थापित करने का श्रेय परमार वंशीय महान शासक उदयादित्य (1059-80) को है। उदयादित्य के शासनकाल में भोपाल नगर का विकास हुआ। उदयादित्य की रानी श्यामला ने भोपाल में सभा मंडल संस्कृत विश्वविद्यालय एवं विशाल शिवमंदिर का निर्माण कराया। कहते हैं कि रानी श्यामला के निवास के कारण ही वर्तमान श्यामला हिल का नाम श्यामला हिल पड़ा। रानी श्यामला द्वारा निर्मित विश्वविद्यालय एवं शिव मंदिर को सन् 1236 ई में मालवा विजय दौरान इल्तुतमिश द्वारा तोड़कर विध्वंस कर दिया गया। परमार कालीन भोजपाल नगर की संरचना मुगल आक्रांताओं के आक्रमण के कारण तहस नहस हो गई। इस दौरान इस नगर का पतन हुआ और यह नगर से गांव मे परवर्तित हो गया।

भोपाल को लगभग 500 वर्ष बाद पुनः बसाने का श्रेय गौड़ रानी कमलापति को जाता है। भोपाल का गौड़ शासक आलम शाह था। उसके बाद उसका पुत्र निजाम शाह भोपाल का शासक हुआ। निजाम शाह ने वर्तमान रायसेन जिले में स्थित गिन्नौर गढ़ का पुनर्निर्माण कराया और इसे अपनी राजधानी बनाया। निजाम शाह ने गिन्नौरगढ़ को 750 गांव बाला राज्य निजाम शाह ने स्थापित किया था। इस गौंड राज्य में भोपाल क्षेत्र के अलावा मरदानपुर, ताल (गौहरगंज, शाहगंज) छीपानेर, बिलकिसगंज, समसगढ़, भूपाल ग्राम, निमावर, चकला चैनपुर, बरेली, उदयपुरा और चंदनगढ़ शामिल थे। कपलापति निजामशाह की रानी थी, जिसके लिए उसने राजाभोज द्वारा निर्मित कल्याण श्रोत बांध (कालियासोत बांध) पर पंचमहल बनवाया था। भोपाल में स्थित कमला पार्क भी रानी कमलापति के नाम पर ही बना है। निजाम शाह का भतीजा चैन शाह गिन्नौर क्षेत्र में लूटपाट करता रहता था। चैन शाह ने एक दावत में रानी कमलापति के पति निजामशाह को जहर देकर मरवा दिया। वह रानी कमलापति से संबंध बनाना चाहता था। चैन शाह से निपटने के लिए रानी कमला पति ने मंगल गढ़ और वैरसिया को जीत कर ख्याति प्राप्त करने वाले अफगान सरदार दोस्त मोहम्मद से संपर्क किया। उससे एक लाख रुपये में अपने पति के हत्यारे चैनशाह को मारने का समझौता किया। दोस्त मोहम्मद ने चैन शाह को मार डाला। कमला पति ने उसे 50 हजार रुपये नगद तथा 10 हजार के वार्षिक राजस्व वाले भोपाल गांव उसे उपहार में दिया, पर शीघ्र ही उसकी नियति में खोट आ गया। उसने कमलापति को अपनी रानी बनाने तथा संपूर्ण गौड़ राज्य पर आधिपत्य करने की योजना बना डाली। रानी ने उसके प्रतिरोध के लिए अपने सैनिकों को जगदीशपुर (इस्लाम नगर) से भोपाल के पश्चिम में लालघाटी पर तैनात कर दिए।

यहां हुए युद्ध मे गौड़ सैनिकों के रक्त से यह घाटी लाल हो गई। तभी से यह क्षेत्र लालघाटी कहलाता है। सैनिकों की पराजय की सूचना मिलते ही कमलापति ने परमार कालीन बांध खोलकर पंचमहल की तीनों मंजिलों को पानी में डुबो दिया। रानी ने अपने गहने और खजाने के साथ पंचमहल के नीचे भाग में जाकर सहेलियों सहित समाधि ले ली। रानी द्वारा जल कल खोल देने से भोपाल गांव भी डूब गया। रानी की मृत्यु पश्चात कृतघ्न दोस्त मोहम्मद ने कमलापति के पुत्र नवलशाह को मरवा दिया और सन् 1723 ई में गिन्नौर गढ़ भी हस्तगत कर लिया। उसने स्वयं को स्वतंत्र नवाब घोषित कर दिया। कहा जाता है कि रानी कमलापति ने अपने साथ विश्वासघात करने बाले दोस्त मोहम्मद को अपनी मृत्यु के पूर्व श्राप दिया था कि उसके वंशज इस क्षेत्र पर कभी भी राज नहीं कर पाएंगे। इस प्रकार दोस्त मोहम्मद ने छल, कपट, धोखा और विश्वासघात से भोपाल की नींव रखी। उसकी मृत्यु के बाद उसका अवैध पुत्र यार मोहम्मद शासक बना। बाद में उत्तराधिकारी के रूप में वैध नवाब न मिलने पर बेगमों का शासन रहा। ममोला बेगम, कुदसिया बेगम, सिकंदर जहां बेगम, शाहजहां बेगम, सुल्तान जहां बेगम अंतिम नवाब हमीदुल्ला तक भोपाल पर सन् 1728 ई. से सन् 1949 ई. तक लगभग 200 वर्ष तक नवाबों का शासन रहा। सन् 1949 में भोपाल रियासत का भारत संघ में विलय होने के साथ ही यह नवाबों के शासन का अंत हो गया।

इतिहास के झरोखे से

पंचाल राज्य का गौरवशाली इतिहास

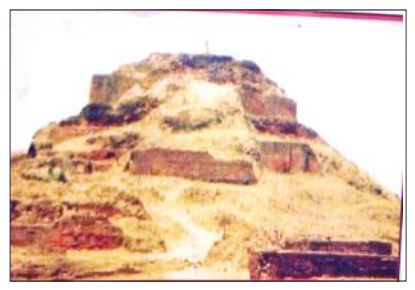

प्रो. गिरिराज नन्दन
इतिहासकार, आंवला, बरेली

बदायूं (इतिहास, पुरातत्व एवं संस्कृति)

अकबर काल- दिल्ली पर मुगल बादशाहत स्थापित होने के बाद बाबर तथा हुमायूं के समय में बदायूं के साथ संभल को भी सूबा बनाया गया। अकबर के समय प्रारंभ में कासिम अली खां तथा कुतुबुद्दीन चिश्ती को बदायूं का सूबेदार बनाया गया। सन् 1572 ई. में बदायूं में भीषण आग लगी, जिसमें जानमाल का बहुत नुकसान हुआ। मुगल सम्राट अकबर के समय (1556-1605) में बदायूं दिल्ली सूबेदार का उप सूबा (बदायूं सरकार) था। वर्तमान जिला शाहजहांपुर, बरेली तथा पीलीभीत के क्षेत्र भी इसी के अंतर्गत थे। वर्तमान जिला बदायूं के इस्लामनगर तथा गुन्नौर संभल सरकार में थे।

अकबर के काल में बदायूं सूबे की सीमा बदायूं बरेली, पीलीभीत एवं शाहजहांपुर तक थी। तहसील गुन्नौर एवं इस्लामनगर संभल में थे बाकी सब बदायूं में थे। बदायूं सूबे को 13 महाल में विभाजित किया गया। (उस समय महाल का स्तर आजकल के तहसील के बराबर था) इनकी कुल कृषि भूमि 8093840 वीघा 10 विसवा थी, जिससे 34817063 दाम (उस समय की मुद्रा) लगान के रूप में वसूल होता था। अबुल फजल ने आइने अकबरी में विस्तृत वर्णन लिखा जिसके अनुसार 1-आजौन (बजबां) 2-आंवला, 3-बदायूं, 4-बरेली, 5- बरसेर (परौर), 6-पॉड, 7-मलही (बलहरी), 8-सहसवान, 1-सांस मुड़िया, 10-सुनेया, 11-कांट, 12-कोट साल वाहन तथा 13-गोला महाल थे। ऐसी जनश्रुति है कि हजरत शाह विलायत के उर्स पर संगीत सम्राट तानसेन यहां आए थे। यहां अकबर ने भी अपनी रानी के साथ आकर ज्यारत की थी। प्रसिद्ध इतिहासकार मुल्ला अब्दुल कादिर बदायूंनी एक महान इतिहासकार हुए थे। अंतिम समय में वह यहीं आकर बस गए थे।

सन् 1605-1947 तक- सन् 1605 में अकबर की मृत्यु के बाद जहांगीर के शासनकाल में फरीद खां यहां के सूबेदार बने। वह मुमताज महल की बहन के पति थे। उन्होंने शेखूपुर में छोटा सा किला बनवाया। शेखूपुर में उनका मकबरा भी बना हुआ है। सन् 1627 में बदायूं अलीकुली खां के आधीन हो गया। जहांगीर के समय में गुन्नौर परगना जदवार के नाम से प्रसिद्ध था। यहां जहांगीर प्राय: शिकार खेलने आया करता था। शाहजहां के काल में सूबे की राजधानी बदायूं से हटाकर बरेली को बना दिया गया। यहां के प्रथम सूबेदार मलिहाबाद के अब्दुल खां तथा उनके बाद नजर मोहम्मद बनाए गए। इन्होंने सन् 1632 में सोत नदी पर सबसे पहले पुल बनवाया। सन् 1656 में राजा माणिक चंद को बरेली का सूबेदार बनाया गया। उस समय बदायूं को संभल से मिला दिया गया तथा इसका पुराना नाम कठेर रख दिया गया। औरंगजेब के समय में मकरंदराय को यहां का सूबेदार बनाया गया। उनके शासनकाल में कठेरियों तथा जंघारे राजपूतों ने विद्रोह किया जिसे दबा दिया गया।

औरंगजेब की मृत्यु के बाद दिल्ली का शासन शक्तिहीन हो गया। स्थानीय जागीरदारों ने उन्नति कर ली। फर्रुखसियर के समय में फर्रुखाबाद के नवाब अहमद खां वंगश ने बदायूं पर अधिकार कर लिया। रुहेलों के उत्थान के बाद सन् 1774 तक बदायूं रुहेलों के अधिकार में रहा। इस वर्ष अंग्रेजों एवं नवाब अवध की सेनाओं ने रुहेलों को परास्त करके उनका राज्य छीन लिया। रामपुर रियासत को छोड़कर समस्त क्षेत्र पर नवाब अवध का अधिकार हो गया। बदायूं पर भी उनका कब्जा हो गया। सन् 1801 में अंग्रेजों ने नवाब अवध से रुहेलखंड अपने अधिकार में ले लिया। बदायूं पर ब्रिटिश हुकूमत स्थापित हो गई। प्रारंभ में बदायूं के क्षेत्र को बरेली में सम्मिलित कर दिया गया। सन् 1823 ई. में यहां सहसवान को मुख्यालय बनाकर पृथक जिला बना दिया गया। सन् 1838 ई. में जिला बदायूं को बना दिया। सन् 1947 के बाद तक बदायूं इसी स्थिति में जिला रहा। इसकी पांच तहसीलें बदायूं, दातागंज, बिसौली, गुन्नार थी। आजादी के बाद अब बिल्सी नई तहसील बना दी गई।

सन् 1857 की क्रांति

मेरठ में उपद्रव होने की सूचना बदायूं में 15 मई को पहुंच गई। यहां तुरंत असंतोष फैल गया। इस समय यहाँ का कलेक्टर विलियम एडवर्ड्स था। इसके अतिरिक्त तीन और अंग्रेज थे। सबसे पहले बेहटा गुसाई में उपद्रव प्रारंभ हुआ। धीरे-धीरे सारे जिले में अराजकता फैल गई। 1 जून सन् 1857 खजाने के पहरेदारी ने विद्रोह कर खजाना लूट लिया। जेल तोड़ दी गई तथा सभी कैदी रिहा कर दिए गए। कलेक्टर एडवर्ड्यस बदायूं छोड़कर फतेहगढ़ को पलायन कर गए। इसी बीच बरेली से कुछ फौजी बदायूं पहुंच गए, जिनके साथ विद्रोह करने वाले सम्मिलित हो गए। नगला शर्की के लोगों ने अदालत मुंसफी तथा थाने को नष्ट कर दिया। विल्ली में नील के कारखानों को नष्ट कर दिया गया। बिसौली में अजीज खां ने तहसील का रुपया लूट लिया।

खान बहादुर खां ने 17 जून को अब्दुर्रहमान खां को बदायूं का नाजिम मुकर्रर किया। जिसने शासन को सुव्यवस्थित करने का प्रयत्न किया। कुछ समय तक देशी हुकूमत बदायूं में रही। शीघ्र ही अंग्रेजी फौजों ने बदायूं पर आक्रमण कर दिया। छुट-पुट मुकाबले के बाद ककराला के मुकाम पर विद्रोहियों की फौजों तथा अंग्रेज फौजों में मुकाबला हुआ। अंग्रेजी फौज का जनरल पेनी (27 अप्रैल 1858) मारा गया लेकिन जीत अंग्रेजों की ही हुई। इसके पश्चात अंग्रेजी सेनाओं ने पूरे जिले पर अपना अधिकार कर लिया। बिसौली से मेजर गारडेन ने सभी विद्रोही हटा दिए। इस्लामनगर में रामनरायन पर रामपुर की फौजों ने आक्रमण करके पकड़ लिया और वह मारे गए। थोड़े ही समय में जनपद का सम्पूर्ण भाग अंग्रेजों के आधीन हो गया। विद्रोहियों को गिरफ्तार कर लिया गया। उनको फांसियां दी गईं। मदद करने वालों को इनाम दिए गए। अगस्त के महीने में पूर्ण शांति स्थापित हो गई तथा मालगुजारी वसूल करना प्रारम्भ हो गया।

रोलां गैरो की लाल बजरी

स्टेफी ग्राफ का एक समय में इतना क्रेज था कि उनको देखते हुए टेनिस के बारे में बहुत कुछ जाना। टेनिस के चारों ग्रैंड स्लैम देखने की उत्सुकता अलग थी, लेकिन रोलैंड गैरोस की लाल बजरी का अलग ही आकर्षण हुआ। दरअसल टेनिस में खेलने के लिए बनाए जाने वाले कोर्ट तीन तरह के होते हैं, पहला होता है "ग्रास कोर्ट" जो घर के लॉन में ही बनाया जा सकता है। विंबलडन जैसी टेनिस का सबसे बड़ा ग्रैंडस्लैम इसी कोर्ट पर होता है। दूसरा है "हार्डकोर्ट" इसे कंक्रीट और तारकोल से बनाते हैं। इसे बनाने में रबड़ का भी उपयोग किया जाता है। यूएस ओपन और ऑस्ट्रेलियाई ओपन इसी कोर्ट पर खेले जाते हैं। वहीं तीसरा लाल बजरी का कोर्ट इसे क्लेकोर्ट भी कहते हैं, जो कि तीन चीजों से मिलाकर बनाया जाता है। ईट के बारीक टुकड़े, लाइमस्टोन और शैल से। ईट के टुकड़ों और लाइमस्टोन को पानी के साथ मिलाकर घोल के रूप में तैयार किया जाता है और इसे कोर्ट की सतह पर फैला दिया जाता है। इसे सूखने के बाद साफ किया जाता है और इस पर लाल पेंट किया जाता है इसलिए इसका रंग लाल हो जाता है।

रश्मि त्रिपाठी
लखनऊ

इस कोर्ट पर खेलना हर खिलाड़ी के लिए आसान नहीं होता। ऐसे कोर्ट पर गेंद बहुत ज्यादा उछाल लेती है, जिससे तेज रिटर्न करना मुश्किल हो जाता है। राफेल नाडाल, ब्योर्न बोर्ड और जस्टिन हेनिन जैसे खिलाड़ियों को इस कोर्ट पर अधिक सफलता मिली है।

फ्रैंच ओपन जीतने के लिए खिलाड़ी को एक्स्ट्रा शारीरिक सौष्ठव की जरूरत होती है। पीट सम्प्रास ने चौदह ग्रैंडस्लैम जीते, लेकिन कभी फ्रैंच ओपन नहीं जीता। इसी तरह वीनस विलियम्स ने भी 'अगर खेलने के लिए कोई जगह है, तो मैं यहां नहीं रहूंगी' लगातार तीसरी बार फ्रैंच ओपन के पहले दौर में हारने के बाद ये बात कही थी। बहरहाल राफेल नाडाल को लाल बजरी का बादशाह कहा जाता है, उन्होंने फ्रैंच ओपन चौदह बार जीता है, जो एक आश्चर्यजनक बात है। महिलाओं में क्रिस एवर्ट ने इसे सबसे ज्यादा सात बार जीता, जबकि स्टेफी ने मात्र छह बार ही ये जीता था। स्वास्थ्य समस्याओं के चलते नाडाल इस बार फ्रैंच ओपन भले ही न खेल पाए हों उन्होंने इससे विदाई नहीं ली है।

फ्रेंच ओपन साल का दूसरा ग्रैंड स्लैम होता है, जो कि मई के अंतिम रविवार से शुरू होता है और जून के पहले दो सप्ताह तक चलता है। फ्रैंच ओपन स्थानीय समयानुसार शाम तीन बजे शुरू होता है। कोर्ट का तापमान 10 सेल्सियस ही रहे इस बात का भी ध्यान रखा जाता है।

पेरिस के पास रोलैंड गैरोस नामक स्टेडियम में ये खेला जाता है, जो कि एक फ्रांसीसी एविएटर रोलैंड गैरोस के नाम पर है। जिन्होंने प्रथम विश्व युद्ध में भाग लिया था। वे लड़ाकू पायलट थे और फुटबॉल और टेनिस खूब खेलते थे। डेस मस्कटेयर्स कप पुरुष एकल ट्राफी को कहा जाता है, जबकि सुजैन लैंगलेन कप महिला एकल ट्राफी का नाम है। जबकि पुरुष युगल जैक्स ब्रुगनन और महिला युगल ट्राफी कोसिमोन मैथ्यू कप कहा जाता हो और मिश्रित युगल ट्राफी का नाम मार्सेलो बर्नाड कप है। इस साल रोला गैंरों को फिर से कार्लोस अल्काराज ने जीता है। जबकि महिला एकल में इसे कोको गॉफ ने जीता है।

अंगकोर की गुप्त सभ्यता का अनावरण

1860 में एक फ्रांसीसी अन्वेषक ने कंबोडिया के घने जंगलों में खोई हुई सभ्यता का पता लगाया। अंगकोर वाट-मध्ययुगीन लंदन से भी बड़ा, देव-राजाओं द्वारा निर्मित, अत्याधुनिक इंजीनियरिंग से संचालित। फिर यह रहस्यमय ढंग से गायब हो गया। मोहोट उस विशालता को देखकर चकित रह गए, जिसे उन्होंने खोजा था। अंगकोर वाट, 900 साल पुराना धार्मिक परिसर, दुनिया का सबसे बड़ा धार्मिक स्मारक है। इसकी जटिल नक्काशीदार शिलालेख, विशाल गलियारे और कमल की आकृति जैसे शिखर यूरोप के भव्य गिरजाघरों को भी टक्कर देते हैं, लेकिन यह तो सिर्फ शुरुआत थी।

रेडार इमेजिंग और आधुनिक पुरातत्व से यह पता चला कि अंगकोर वाट दरअसल अंगकोर थॉम नामक एक महानगर का हिस्सा था, जो आज के लंदन जितना विशाल था। 9 वीं से 15 वीं शताब्दी के बीच खमेर साम्राज्य ने पूरे दक्षिण-पूर्व एशिया पर राज किया, जिसकी राजधानी अंगकोर थी। इस साम्राज्य का विस्तार वियतनाम से लेकर लाओस और थाईलैंड तक फैला हुआ था। उस समय लंदन में जहां लगभग 6 लाख लोग रहते थे, वहीं अंगकोर में 10 लाख से भी अधिक लोग बसे थे।

अंगकोर एक आध्यात्मिक, आर्थिक और सांस्कृतिक महाशक्ति था। शहर को बारीकी से नियोजित किया गया था। सड़कों और नहरों का एक विशाल जाल मंदिरों और गांवों को जोड़ता था। धान की खेती के लिए परिष्कृत जल प्रबंधन प्रणाली थी, जो इतनी बड़ी आबादी का पेट भरती थी। भव्य मंदिर, जिनमें से प्रत्येक को किसी राजा ने अपने समाधि स्थल के रूप में बनवाया था और जिन्हें हिंदू देवताओं के पौराणिक घर 'सुमेरु पर्वत' की छवि में निर्मित किया गया था। खमेर साम्राज्य के केंद्र में यह विश्वास था कि उनके राजा स्वयं देवता थे।

12 वीं शताब्दी में राजा सूर्यवर्मन द्वितीय द्वारा निर्मित अंगकोर वाट की रचना दिव्य सत्ता और अधिकार का प्रतीक थी। इसका डिजाइन ब्रह्मांडीय व्यवस्था को दर्शाता है। खाइयां समुद्र का प्रतीक थीं और शिखर सुमेरु पर्वत की चोटियों के प्रतीक।

"महान निर्माता राजा" जयवर्मन सप्तम ने साम्राज्य का विस्तार किया और सैकड़ों मंदिरों और आधारभूत संरचनाओं का निर्माण कराया। उनके निर्माणों में अंगकोर थॉम और बायोन मंदिर प्रमुख थे, जिनकी दीवारों पर विशाल पत्थर के चेहरे उकेरे गए हैं।

कंबोडिया की कठोर जलवायु में जल एक वरदान भी था और अभिशाप भी। खमेरों ने जलाशयों, नहरों और बांधों का जटिल जाल तैयार किया था, जिससे पूरे वर्ष पानी संग्रहित और वितरित किया जाता था। इस प्रणाली की मदद से वे बड़े पैमाने पर धान की खेती करते थे, जिससे न केवल उनकी जनता का भरण-पोषण होता था, बल्कि व्यापारिक संपन्नता भी मिलती थी। अध्ययनों से पता चलता है कि यह जल प्रबंधन प्रणाली प्राचीन दुनिया की सबसे परिष्कृत प्रणालियों में से एक थी, जो बाद के समय में डच नहर प्रणाली को भी टक्कर देती थी।

सदियों तक अंगकोर जंगलों में छिपा रहा, उसकी भव्यता दुनिया की नजरों से ओझल रही। 1860 में मोहोट की खोज ने वैश्विक जिज्ञासा को जन्म दिया। खोजकर्ताओं, पुरातत्वविदों और इतिहासकारों की भीड़ कंबोडिया पहुंचने लगी, ताकि इसके रहस्यों से पर्दा उठाया जा सके। आज अंगकोर वाट एक यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल है और कंबोडिया की सांस्कृतिक पहचान का प्रतीक है। पुरातत्वविद आज भी खुदाई में जुटे हैं, जो खमेर लोगों के जीवन और उनके अद्भुत कारनामों पर रोशनी डाल रही है।

-राजा हिन्दुस्तानी, सोशल साइट्स

जालौन में 1857 की क्रांति के कारण

1857 की क्रांति में सिंधिया ने अंग्रेजों की बहुत मदद की थी। अतः 1861 में इनाम के बतौर गवर्नर जनरल ने जालौन के परगना इंदुरखी और माधोगढ़ के 125 गांव तथा परगना दबोह के 101 गांव सिंधिया को दे दिए, जिसमें लिखा गया- "विद्रोह के दौरान महामहिम सिंधिया की सेवाओं के लिए एक मुफ्त उपहार और स्वेच्छा से स्वीकृति के रूप में" दिसंबर 1860 की संधि में यही लिखा गया है। इस प्रकार 1861 में जालौन जिले से 255 गांव और निकल गए। अब जालौन जिले में परगना जालौन, उरई, माधोगढ़, कोंच और कालपी (आटा) बचे। इसके बाद जालौन जिले में ज्यादा बदलाव नहीं हुआ। 1891 तक हमीरपुर जिले के तीन गांव और जालौन को मिले। वर्ष 1914 में जालौन जिले के छह गांव पूंछ, खिल्ली टाठी, सरायं-झांसी और भोरा-एरच झांसी जिले में गए। 1955 में हमीरपुर जिले के शमशी हाजीपुर, सलैया, बसराही, क्योटरा, चीपुरा और हेमनपुरा नामक गांव जालौन जिले में आए। स्वतंत्रता प्राप्त होने पर विन्ध्य प्रदेश बना। मगर कुछ ही वर्षों में उसका विघटन होने पर दतिया स्टेट की नदीगांव तहसील के गांव और कदौरा-बावनी राज के अधिकांश गांवों को जालौन जनपद में शामिल कर दिया गया। तब से जालौन जिला अपने वर्तमान स्वरूप में है। ह्वाइट साहब ने जब कालपी परगने का अंतिम रूप से बंदोबस्त किया था उस रिपोर्ट में उन्होंने जालौन जिले के इतिहास पर भी अपने मेमोयर शामिल किए थे। इसमें भी जालौन जिले के इतिहास पर काफी रोचक जानकारी मिलती है तथा यह भी पता चलता है कि जालौन जिले का गठन कैसे हुआ।

1853 तक यहां पर अंग्रेजों ने अपने पैर मजबूती से जमा कर जब जिले का गठन कर लिया तब उनके सामने यह प्रश्न आया कि जालौन की देशी रियासतों के साथ किस प्रकार का संबंध रखा जाए। जिले का बंदोबस्त करने में इन राज्यों के गांवों को भी लिया जाए या छोड़ दिया जाए। कानून इनके यहां पुराने ही चलने दिए जाए या अपने लागू करें। जिले में कोई कानून नहीं दिखता था, जो राजा या उनके मुख्तार ठीक समझें या करें वही नियम था। राजाओं के यहां लगान वसूली में जनता पर बड़े अत्याचार होते थे। रामपुरा राज के दीवान भैरो प्रसाद तिवारी ने लगान समय से न जमा करने के कारण बहुत से लोगों को किले में कैद कर रखा था और उन पर जुल्म भी किए जा रहा थे। हर राज में अलग-अलग स्थितियां थीं। जिले में पदस्त बड़े हाकिम ने इस विषय पर बांदा में पदस्त एजेंट टू गवर्नर जनरल फार बुंदेलखंड से सलाह मांगी। एजेंट ने एक पत्र द्वारा डिटेल में एक गाइड लाइन भेजी थी। इतेफाक से वह मुझको प्राप्त हो गया। इससे पता चलेगा कि कंपनी सरकार की इन जागीरों के साथ क्या नीतियां थीं?

देवेन्द्र कुमार सिंह
इतिहासकार, जालौन

जालौन में 1857 की क्रांति के कारण

मेजनी ने कहा है कि स्वतंत्रता प्रत्येक का निसर्गदत्त अधिकार है अतः इस निसर्गदत्त अधिकार का अपहरण करने वाले प्रत्येक अत्याचारी का उच्छेदन करना भी निसर्गदत्त कर्तव्य है। 1857 के स्वतंत्रता संग्राम के पीछे भी शायद मेजनी की उपरोक्त धारणा ही बलवती रही थी। जनपद जालौन में भी अंग्रेजी शासन के प्रति असंतोष के अनेक कारण थे, जिन्होंने यहां के प्रमुख तथा आमजन को अपने अधिकारों के प्रति सचेत किया। जालौन में मराठा राज का कंपनी राज में विलीनीकरण ने जालौन की ताईबाई की आशाओं का गला घोट दिया। नाना गोविंदराव की नातिन होने के कारण उसका जो अधिकार बनता था, उसकी अंग्रेजों द्वारा पूर्णतया उपेक्षा की गई। जालौन में किए जाने वाले भूमि बंदोबस्त से भी जनता में असंतोष व्याप्त था। मराठों द्वारा जनता से कितना लगान लिया जाता था उसकी सूचना तो उपलब्ध नहीं है। 1805 में जब अंग्रेजों ने जिले के कोंच और कालपी परगनों पर अधिकार किया तभी से बंदोबस्त के आंकड़े उपलब्ध है। उन पर नजर डालने से पता चलता है कि कंपनी सरकार किस प्रकार से यहां की जनता को लुटने में लगी थी।

जो जमींदार लगे थे, वे गरीबी की स्थिति में पहुंच गए और पागल सट्टेबाजों में से भी कोई नहीं बचा, वे दरिद्र या बर्बाद होकर वहां से चले गए। 1838 में जलौन के मराठा राज की स्थिति सुधरने के लिए कैप्टेन डूलन को कंपनी सरकार ने यहां भेजा था। डूलन ने जालौन में न रह कर उरई को मुख्यालय बनाया। डूलन का काम था मराठा राज की वित्तीय स्थिति को सुधारना। इस पीरियड में चूंकि सभी खर्चे जालौन राज को ही उठाने थे अतः खर्चे कम किए जाने चाहिए थे, मगर ऐसा नहीं किया गया। डूलन का वेतन 2000 रुपये प्रति माह निर्धारित किया गया यही नहीं उनकी मदद के लिए 250 रुपये प्रतिमाह के वेतन पर चार सहायक भी दिए गए। उस समय के हिसाब से यह बहुत अधिक था। डूलन ने पहला काम जो किया वह था मराठा राज की सेना को भंग करना। इस कारण यहां पर बेकारी फैली और लोगों अंग्रजों के प्रति क्रोध पैदा हुआ। डूलन ने जो बंदोबस्त किया वह इतना ज्यादा था की वसूल ही नहीं हो सकता था। कड़ाई से वसूली करने से और असंतोष हुआ। 1855 में जालौन के अधिकारी ने खुद उच्च अधिकारी को लिखा कि जमींदारों की स्थिति बहुत खराब है और उनमें से अधिकतर कर्ज में डूबे हैं, उनके पास जानवरों को छोड़ कर और कोई दूसरी व्यक्तिगत संपत्ति नहीं है। मालगुजारी एकत्रित करना बहुत मुश्किल है, क्योंकि जिले की भूमि के 1/6 भाग पर तो कृषि कार्य होता ही नहीं है। उसने सुझाव दिया कि जमा में किसी भी प्रकार की वृद्धि नहीं होनी चाहिए। मेजर इर्शिकिन द्वारा किया गया बंदोबस्त कुछ ज्यादा ही भारी था। ऐसी स्थिति में जालौन की जनता का असंतुष्ट होना स्वाभाविक ही था।